लखनऊ, शुक्रवार, 14 अप्रैल 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 51 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

अतीक को तगड़ा झटका, एनकाउंटर में बेटा असद अहमद ढेर

अतीक का शूटर गुलाम भी मारा गया, एसटीएफ ने किया एनकाउंटर

बेटे की मौत की खबर सुन फूट फूटकर रोया अतीक

यूपी एसटीएफ ने अतीक अहमद के बेटे असद को एनकाउंटर में ढेर कर दिया है। झांसी में असद के साथ शूटर गुलाम एनकाउंटर में मारा गया है। प्रयागराज कोर्ट में अतीक अहमद की पेशी के दौरान जब असद के एनकाउंटर की खबर मिली तो कोर्ट में ही फूट-फूटकर रोने लगा। अशरफ भी हैरान रह गया। उमेश पाल हत्याकांड में शूटर असद और गुलाम दोनों ही फरार चल रहे थे। यूपी पुलिस की ओर से दोनों के ऊपर पांच-पांच लाख रुपये का ईनाम रखा गया था। झांसी में यूपी एसटीएफ के डिप्टी एसपी नवेंदु और डिप्टी एसपी विमल की नेतृत्व में हुए एनकाउंटर में दोनों को ढेर कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि असद और मोहम्मद गुलाम झांसी में पारीछा डैम के पास छिपे हुए थे। पारीछा डैम झांसी में बड़ा गांव और चिरगांव थाना क्षेत्र के बीच में है। इसी इलाके में दोनों छिपकर बैठे हुए थे। पुलिस टीम अभी भी इलाके में कॉम्बिंग कर रही है। यूपी एसटीएफ ने झांसी के बड़ागांव थाना क्षेत्र में एनकाउंटर किया है। यह जगह कानपुर-झांसी हाईवे पर स्थित है। झांसी से कानपुर की ओर 30 किलोमीटर पहले लोकेशन पर एसटीएफ ने असद और गुलाम को मार गिराया। साबरमती से प्रयागराज लाते वक्त अतीक अहमद ने कहा था कि वह मिट्टी में मिल चुका है। वह अब रगड़ा जा रहा है। उसने पत्नी और बच्चों को परेशान न करने की गुहार लगाई थी।

(संवाददाता)

लखनऊ । उमेश पाल हत्याकांड के बाद से फरार चल रहे माफिया अतीक अहमद के बेटे असर को एसटीएफ ने मुठभेड़ में ढेर कर दिया है। एसटीएफ और असद के बीच झांसी में मुठभेड़ हुई। इस दौरान मुठभेड़ में माफिया का बेटा मारा गया। बताया जा रहा है कि शूटर गुलाम पुलिस मुठभेड़ में मारा गया है। एसटीएफ को उनके झांसी में होने की जानकारी मिली। इसके बाद एसटीएफ ने घेराबंदी की। खुद को घिरता देख दोनों ने फायरिंग शुरू कर दी। इसके बाद मुठभेड़ में असद और गुलाम में मारे गए। उमेश पाल हत्याकांड के बाद से असद फरार चल रहा था। यूपी एसटीएफ ने बताया कि अतीक के बेटे असद के पास से विदेशी निर्मित अत्याधुनिक हथियार बरामद हुए हैं। झांसी में डिप्टी एसपी नवेंदु और डिप्टी एसपी विमल के नेतृत्व में यूपीएसटीएफ की टीम के साथ हुई मुठभेड़ में अतीक के बेटे असद और गुलाम की मौत हो गई। उमेश पाल मर्डर केस में अतीक का बेटा असद और गुलाम पर पांच-पांच लाख का इनाम था। अतीक के बेटे असद और गुलाम दोनों उमेश पाल हत्याकांड में वांछित थे।

सीएम योगी की एसटीएफ की तारीफ, बुलाई कानून व्यवस्था को लेकर बैठक

अपराध करके कोई अपराधी बचेगा नही : ब्रजेश

(संवाददाता)

लखनऊ । उमेश पाल हत्याकांड में फरार असद अहमद और शूटर गुलाम के एनकाउंटर पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों की तारीफ की। सीएम ने कानून व्यवस्था पर बड़ी बैठक बुलाई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एसटीएफ की सराहना की। अमिताभ यश और अधिकारियों की सराहना की। प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद ने इस एनकाउंटर की जानकारी मुख्यमंत्री को दी। इस पूरे मामले सीएम के सामने रिपोर्ट रखी गई। वहीं बीजेपी नेता और विधायक नेता सिद्धार्थनाथ सिंह ने कहा कि पुलिस और एसटीएफ अपना काम कर रही है। यह कार्रवाई भी संविधान के तहत है।अपराधियों के प्रति बीजेपी सरकार की जीरो टॉलरेंस की नीति रहती है। मुख्यमंत्री की कथनी और करनी में अंतर नहीं है, यह उसकी एक मिसाल है। दूसरी ओर डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि हमारा संकल्प है कि हम उत्तर प्रदेश से

गुंडे माफिया और अपराधियों को खत्म करेंगे। कोई भी ऐसा अपराधी जो अपराध करेगा वो प्रदेश में खुला नहीं घूमेगा। उत्तर प्रदेश कानून के माध्यम से सजा दिलाने में उत्तर प्रदेश पहले नंबर पर है। उत्तर प्रदेश में कोई अपराधी अपराध करके बचेगा नहीं।

संक्षिप्त समाचार

सही गलत के फैसले का अधिकार सत्ता को नहीं : अखिलेश

(संवाददाता) लखनऊ । माफिया अतीक अहमद के बेटे असद अहमद के पुलिस एनकाउंटर में मारे जाने को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने झूठा एनकाउंटर बताया है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आज गुरुवार को ट्वीट कर कहा कि झूठा एनकाउंटर करके भाजपा सरकार सच्चे मुद्दों से ध्यान भटकाना चाह रही है। भाजपाई न्यायालय में विश्वास ही नहीं करते। आज के व हालिया एनकाउंटरों की गहन जांच पड़ताल हो और दोषियों को छोड़ा न जाए। सही गलत के फैसलों का अधिकार सत्ता का नहीं होता है। भाजपा भाईचारे के खिलाफ है।

देश में बढ़ते स्टार्टअप युवा शक्ति का प्रतीक : सिंधिया

(एजेंसी) भोपाल। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने आज कहा कि देश में लगातार बढ़ते स्टार्टअप भारत की युवाशक्ति का प्रतीक हैं। श्री सिंधिया मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित रोजगार मेले को संबोधित कर रहे थे। इस रोजगार मेले को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित किया। इस दौरान भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा भी उपस्थित रहे। श्री सिंधिया ने कहा कि आज देश में 80 हजार से अधिक स्टार्टअप्स और 116 यूनिकॉर्न हैं। यह भारत की युवाशक्ति का प्रतीक है।

युवाओं को खुश करने में जुटी शिवराज सरकार

(एजेंसी) भोपाल। मध्यप्रदेश में इसी साल विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। इन चुनावों में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। लिहाजा शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली सरकार इस वर्ग को खुश करने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहती। यही कारण है कि सरकारी नौकरी के द्वार खोले जा रहे हैं। राज्य में विधानसभा चुनाव के चलते मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस बेरोजगारी को मुद्दा बना रहा है और वहीं सरकार की नीतियों पर हमलावर है। इसके विपरीत राज्य सरकार ने एक लाख युवाओं को नौकरी देने का वादा किया है और यह सिलसिला शुरू भी हो चुका है। राज्य में एक साथ 22 हजार से ज्यादा युवाओं को शिक्षकों की पद पर नियुक्ति करने के साथ नियुक्ति पत्र वितरित किए गए हैं। इतना ही नहीं राज्य सरकार की कोशिश है कि इस साल लगभग 60 हजार शिक्षकों की नियुक्ति की जाए। इसके अलावा अन्य विभागों में भी नियुक्ति का अभियान चलाया जा रहा है।

पीएम मोदी ने 71 हजार युवाओं को दिए अपॉइंटमेंट लेटर

इशारों-इशारों में साधा चिदंबरम पर निशाना

(एजेंसी)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 'नया भारत नई नीतियों और रणनीतियों के साथ आगे बढ़ रहा है और उनकी सरकार अतीत के 'प्रतिक्रियाशील दृष्टिकोण को छोड़कर प्रौद्योगिकी व बुनियादी ढांचे के मामलों में सक्रियता से काम कर रही है। पीएम मोदी ने 'रोजगार मेले को वीडियो कांफ्रेंस के जरिए संबोधित करते हुए कहा कि लघु एवं सूक्ष्म उद्यमों के लिए मुद्रा ऋण परियोजना से आठ करोड़ से अधिक नए उद्यमी पैदा हुए हैं और सरकार की नीतियों एवं रणनीतियों ने नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। उन्होंने उन लोगों पर भी निशाना साधा जो खुद को 'बड़ा अर्थशास्त्री मानते हैं, ये बड़े कारोबारियों को 'फोन पर कर्ज देते थे और आज मुद्रा योजना का मजाक उड़ा रहे हैं। कांग्रेस के दिग्गज नेता और पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम पर था। चिदंबरम ने हाल ही में मुद्रा योजना पर सवाल उठाया था और आश्चर्य जताया था कि 50,000 रुपए के ऋण के साथ किस तरह के व्यवसाय शुरू किए जा सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस योजना के तहत 23 लाख करोड़ रुपए का ऋण दिया गया है, जिसमें 70 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं। उन्होंने कहा कि माइक्रो फाइनांसिंग जमीनी स्तर की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में बहुत कुछ करता है, लेकिन कुछ लोग जो खुद को बड़ा अर्थशास्त्री मानते हैं, उन्हें कभी इसका एहसास नहीं हुआ और वे आम आदमी की क्षमताओं को नहीं समझते हैं। कार्यक्रम में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में 71,506 भर्तियों के लिए अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र दिए गए। मोदी ने 2014 में सत्ता में आने के बाद से बदलाव के पैमाने को रेखांकित करने के लिए विकास के कई आंकड़ों का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि 2014 तक सात दशकों में केवल 20,000 किलोमीटर रेल लाइन का विद्युतीकरण किया गया था, लेकिन पिछले नौ सालों में यह आंकड़ा 40,000 किलोमीटर हो गया है। उन्होंने कहा कि 2014 तक ग्रामीण सड़क की लंबाई चार लाख किलोमीटर थी लेकिन अब यह 7.25 लाख किलोमीटर हो गई है जबकि गांवों में छह लाख किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर बिछाया गया है। पीएम मोदी ने कहा कि देश में 148 हवाई अड्डे हैं जबकि पहले यह संख्या

74 थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले नौ वर्षों में केंद्र सरकार ने पूंजीगत व्यय में चार गुना की वृद्धि की है जिसकी वजह से ना सिर्फ रोजगार के अवसर बढ़े बल्कि लोगों की आय में भी वृद्धि हुई है। उन्होंने यह भी कहा कि श्आत्मनिर्भर भारत अभियानश् गांव से लेकर शहरों तक, भारत में रोजगार के करोड़ों अवसर पैदा करने वाला अभियान है। प्रधानमंत्री ने भारत को दुनिया की सबसे तेज रफ्तार से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था करार देते हुए कहा कि आज जहां पूरी दुनिया कोविड महामारी के बाद मंदी से जूझ रही है और ज्यादातर देशों की अर्थव्यवस्था लगातार गिरती जा रही है, वहीं इन सबके बावजूद पूरी दुनिया भारत को एक उभरती ताकत (ब्राइट स्पॉट) के रूप में देख रही है। उन्होंने कहा, ''आज का नया भारत जिस नई नीति और रणनीति पर चल रहा है उसने देश में नई संभावनाओं और अवसरों के द्वार खोल दिए हैं।श्श् बुनियादी अवसंरचना में निवेश को रोजगार के अवसर पैदा करने का एक और पक्ष बताते हुए पीएम मोदी ने कहा कि जब सरकार पूंजीगत व्यय पर खर्च करती है तो बड़े पैमाने पर सड़क, रेलवे, बंदरगाह जैसी बहुत सी चीजें तैयार हो जाती हैं।

केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट से कहा, ईसाई खतरे में हैं का दावा झूठ

(एजेंसी)

नई दिल्ली। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट के समक्ष आठ राज्यों से रिकॉर्ड डेटा पेश किया है। इसमें दावा किया गया है कि देश भर में ईसाइयों पर बढ़ते हमलों का आरोप लगाने वाली याचिका याचिकाकर्ताओं द्वारा एक झूठी तस्वीर पेश करने का प्रयास है। केंद्र का प्रतिनिधित्व कर रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और छत्तीसगढ़ सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिवक्ता सुमीर सोढ़ी ने मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष याचिकाकर्ताओं का प्रतिनिधित्व कोलिन गोंजाल्विस के तर्कों का विरोध किया। गोंजाल्विस ने कहा कि यह गिरफ्तारी का सवाल नहीं है। केंद्र के अनुसार, बिहार में याचिकाकर्ताओं ने 38 घटनाओं (ईसाइयों पर हमले) का दावा किया, हालांकि राज्य सरकार ने 15 घटनाओं की सूचना दी। इनमें से पांच मामलों को दोनों पक्षों के बीच सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझा लिया गया, 12 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया और दो मामलों में चार्जशीट दायर की गई। मामलों। छत्तीसगढ़ में, याचिकाकर्ताओं द्वारा 119 घटनाओं का दावा किया गया था, हालांकि राज्य सरकार ने 36 घटनाओं की सूचना दी और 12 घटनाओं में पारिवारिक विवाद था, जिन्हें सौहार्दपूर्ण तरीके से सुलझा लिया गया और 64 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया और 13 मामलों में आरोप पत्र दायर किया गया। उत्तर प्रदेश में, याचिकाकर्ताओं द्वारा 150 घटनाओं का दावा किया गया था, लेकिन राज्य सरकार द्वारा 70 घटनाओं की सूचना दी गई थी। इसने कहा कि 44 एफआईआर दर्ज की गईं और 72 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया और 33 को सीआरपीसी की धारा 41-ए के तहत नोटिस दिया गया और 30 मामलों में आरोप पत्र दायर किए गए हैं। सुनवाई के दौरान, मेहता ने ईसाइयों पर हमलों की संख्या पर याचिकाकर्ताओं के आंकड़ों को गलत बताया। उन्होंने बताया कि याचिकाकर्ताओं ने कहा कि बिहार में 38 घटनाओं का दावा किया, लेकिन ये पड़ोसियों के बीच झगड़े थे। मामले में कार्रवाई की गई है।

ललित मोदी को सुप्रीम कोर्ट से फटकार

(एजेंसी) नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोशल मीडिया पर न्यायपालिका के खिलाफ की गई टिप्पणी के लिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के पूर्व प्रमुख ललित मोदी को फटकार लगाई और उन्हें बिना शर्त माफी मांगने का निर्देश दिया। जस्टिस एम. आर. शाह और जस्टिस सी. टी. रविकुमार की पीठ ने कहा कि ललित मोदी कानून व प्रणाली से ऊपर नहीं हैं और वह उनके द्वारा दाखिल जवाबी हलफनामे से संतुष्ट नहीं हैं। शीर्ष अदालत ने ललित मोदी को सोशल मीडिया और प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्रों के जरिए माफी मांगने का निर्देश दिया। शीर्ष अदालत ने उन्हें माफी मांगने से पहले एक हलफनामा दाखिल करने का भी निर्देश दिया, जिसमें कहा जाए कि भविष्य में ऐसी कोई टिप्पणी (पोस्ट) नहीं की जाएगी ।

हनुमान जयंती शोभायात्रा हिंसा, संबलपुर में इंटरनेट सेवाएं निलंबित, धारा 144 लागू, हिरासत में 43 लोग

(एजेंसी)

संबलपुर। ओडिशा सरकार ने हनुमान जयंती पर निकाली गई शोभायात्रा के दौरान हिंसा भड़कने के बाद संबलपुर जिले में बृहस्पतिवार को सुबह 10 बजे से 48 घंटे के लिए इंटरनेट सेवाएं निलंबित कर दीं और इलाके में निषेधाज्ञा लागू की है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। हिंसा में एक महिला कर्मी सहित कम से कम 10 पुलिस कर्मी घायल हो गए थे। हालांकि पुलिस ने हिंसा में हताहत हुए नागरिकों की जानकारी नहीं दी। प्रशासन ने संबलपुर शहर के छह थाना क्षेत्रों टाउन, धनुपाली, खेतराजपुर, ऐंथापाली, बरेईपाली और सदर के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में अपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू की है। गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डी. के. सिंह ने संबलपुर में इंटरनेट पर रोक के संबंध में एक अधिसूचना जारी की। अधिसूचना के अनुसार, ''स्थिति गंभीर है और संबलपुर जिले में सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए उपद्रवी सोशल मीडिया के जरिए झूठे और भड़काऊ संदेश प्रसारित कर रहे हैं। सिंह ने कहा कि ''भड़काऊ और उकसावे वाले उन संदेशों के प्रसार को रोकने के लिए इंटरनेट सेवाएं निलंबित कर दी गई हैं, जिनसे ''सांप्रदायिक भावनाएं भड़क सकती हैं। अधिसूचना के अनुसार, ''सोशल मीडिया मंच व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि तक पहुंच नहीं होगी। सभी एमएसपी व आईएसपी और ब्रॉडबैंड डायल अप सिस्टम की इंटरनेटडाटा सेवाएं निलंबित रहेंगी। संबलपुर पुलिस अधीक्षक (एसपी) बी. गंगाधर ने बताया कि 43 लोगों को हिरासत में लिया गया है और 26 लोगों पर अब तक भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। 30 टुकड़ियों को तैनात किया गया है। हिंसा में किसी तरह की साजिश होने के सवाल पर गंगाधर ने कहा, ''हमें लगता है कि यह एक छिटपुट घटना है। जांच की जा रही है। स्थिति अब नियंत्रण में है। गंगाधर ने बताया कि शुक्रवार को प्रस्तावित हनुमान जयंती समारोह और शोभायात्रा की अनुमति दी जाए या नहीं, इस पर जल्द ही एक बैठक बुलाई जाएगी।

लखनऊ की एनआईए कोर्ट ने आतंकी वलीउल्लाह को उम्रकैद सजा सुनाई

(संवाददाता)

लखनऊ । लखनऊ की एनआईए कोर्ट ने आतंकी वलीउल्लाह को दो अलग-अलग मामलों में उम्रकैद की सजा सुनाई है। उस पर 10 हजार का जुर्माना भी लगाया है। बुधवार को एनआईए कोर्ट के विशेष न्यायाधीश विवेकानंद शरण त्रिपाठी ने वलीउल्लाह को डेढ़ किलो आरडीएक्स, डेटोनेटर और देसी पिस्टल बरामदगी के मामले में दोषी करार दिया था। वलीउल्लाह को वाराणसी सीरियल ब्लास्ट मामले में पहले ही गाजियाबाद की कोर्ट से फांसी की सजा मिल चुकी है। डीजीसी एमके सिंह ने बताया कि पहला मामला वाराणसी में 2006 में

हुए सीरियल ब्लास्ट में इस्तेमाल विस्फोटक सामग्री को पहुंचाने और दूसरा मामला आरडीएक्स डेटोनेटर एवं फैक्ट्री मेड विदेशी पिस्टल के साथ पकड़े जाना का है। आरोपी को 5 अप्रैल 2006 को वाराणसी के भेलूपुर तत्कालीन क्षेत्राधिकारी पीएन त्रिपाठी ने लखनऊ के गोसाईंगंज थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया था। गिरफ्तारी के समय वलीउल्लाह से फैक्ट्री मेड पिस्टल, जिंदा कारतूस के अलावा डेढ़ किलो आरडीएक्स मिला था। पुलिस की पूछताछ में वलीउल्लाह ने बताया था कि बनारस मजहबी जगह है, उसका इरादा था कि दिल्ली की तरह होली त्योहार के पहले बम विस्फोट कर दहशतगर्दी की जाए। ताकि वहां के मुसलमानों के दिलों में ठंडक पहुंच सके। कोर्ट को बताया गया कि आतंकी ने साथियों के साथ प्लान के मुताबिक 3 मार्च 2006 की रात 10 बजे फूलपुर आया और उन लोगों ने किराए के मकान में बांग्लादेशी आतंकियों को रुकवाया। जिसके बाद 4 मार्च को सुबह बनारस जाकर बम विस्फोट के लिए मंदिर की शक्ल में बने रेलवे स्टेशन, संकट मोचन मंदिर और दशाश्वमेध घाट को टारगेट के लिए तय किया। कोर्ट को बताया गया कि संकट मोचन मंदिर सहित अन्य स्थलों पर विस्फोट करके तबाही मचाने के आरोप में वलीउल्लाह को 6 जून 2022 को गाजियाबाद के जिला जज जितेंद्र सिन्हा ने कि अदालत ने फैसला सुनाया। कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि दोषी को तब तक फांसी के फंदे पर लटकाया जाए, जब तक उसकी मौत न हो जाए। राजेश चंद्र शर्मा ने बताया कि 7 मार्च 2006 को सीरियल बम धमाके में 18 लोग मारे गए थे। करीब 76 लोग घायल हुए थे। 5 अप्रैल 2006 को पुलिस ने इस मामले में प्रयागराज जिले के फूलपुर गांव निवासी वलीउल्लाह को गिरफ्तार किया। हाईकोर्ट के आदेश पर इस केस की सुनवाई वाराणसी से गाजियाबाद कोर्ट में ट्रांसफर हुई थी। 4 जून को गाजियाबाद के जिला न्यायाधीश जितेंद्र कुमार सिन्हा की अदालत ने वलीउल्लाह को दशाश्वमेध घाट और संकट मोचन मंदिर पर बम धमाका करने, हत्या, हत्या का प्रयास, कानून के खिलाफ काम करने, दहशत फैलाने और विस्फोटक पदार्थ का प्रयोग करने में दोषी करार दिया था। जबकि कैंट रेलवे स्टेशन पर हुए बम धमाके में साक्ष्यों के आधार पर कोर्ट ने उसे बरी कर दिया था। वलीउल्लाह से पूछताछ में उसके साथियों मुस्तकीम, जकारिया और शमीम के नाम भी सामने आए थे। ये सभी उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे।

नीतीश के मांझी पर भाजपा की नजर, बदलते रहे हैं ठिकाना

(एजेंसी)

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दिल्ली दौरे के बाद पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी भी दिल्ली पहुंचे हैं। दिल्ली में उन्होंने गुरुवार को गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर एक ज्ञापन सौंपा तथा माउंटेन मैन दशरथ मांझी को भारत रत्न देने की मांग की। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विपक्षी दलों के एकजुट करने की कवायद के बीच मांझी का दिल्ली जाकर गृह मंत्री शाह से मिलने की सूचना के बाद प्रदेश की सियासत में कई तरह के कयास लगाए जाने लगे। हालांकि मांझी ने गृहमंत्री से मुलाकात के बाद इन कयासों पर विराम लगाते हुए कहा कि वे नीतीश कुमार के साथ हैं, वह जहां रहेंगे, उसी के साथ मैं भी रहूंगा। उन्होंने नीतीश की तारीफकरते हुए यहां तक कह दिया कि उनमें प्रधानमंत्री बनने के सारे गुण हैं। वह विपक्षी दलों को एकजुट करने का ईमानदार प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि दशरथ मांझी, जननायक कर्पूी ठाकुर और आजाद भारत में बिहार के पहले मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण को भारत रत्न देने की भी मांग की। उन्होंने साफलहजे में कहा कि एनडीए में जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता है। वैसे, भले ही मांझी एनडीए में जाने के किसी भी संभावना से इनकार कर रहे हों, लेकिन बिहार की सियासत में इस मुलाकात के कई मायने निकाले जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि नीतीश के महागठबंधन के साथ जाने के पहले मांझी एनडीए में थे और उस समय भी अमित शाह गृह मंत्री थे।

संपादकीय

कोरोना फिर डरा रहा है...

महामारी की आहट आ रही हो तो सम्भल जाना चाहिए। कोरोना फिर दस्तक दे रहा है,अलर्ट हो जाना चाहिए तथा उपाय करने चाहिए। यद्यपि कोरोना के नए-नए वैरिएंट इतने घातक न हों जितने हमने पूर्व में देखें और झेले हैं। फिर भी महामारी का आतंक अब तक व्याप्त है। आईआईटी कानपुर के विशेषज्ञों ने अपनी अंक गणना के आधार पर कहा कि अब कोरोना सिर्फसाधारण जुकाम और खांसी के रूप में ही रहेगा लेकिन उन्होंने एक भविष्यवाणी करके चौंका दिया है। उनका कहना है कि मई 2023 तक रोज 2 हजार से ज्यादा केस आ सकते हैं। किसी भी महामारी या आपदा के बाद पूरी मशीनरी निष्क्रिय और शिथिल हो जाती है। हम नए हादसों का इंतजार करने लगते हैं। अहम सवाल है कि अगर हजारों लोग साधारण रोग के लिए भी अस्पतालों में उमड़ पड़ते हैं तो क्या इतना बड़ा बोझ झेलने के लिए हमारा तंत्र तैयार है। बेहतर यही होगा कि सरकारी व निजी क्षेत्र के अस्पताल किसी भी आपदा से निबटने के लिए अलर्ट रहें तथा सतर्कता से काम करें। इसमें कोई संदेह नहीं कि जब भी दुनिया के किसी भी देश में कोई महामारी आती है तो वह इतनी जल्दी नहीं जाती। मुसीबत के बारे में भी यही कहा गया है कि जब आती है तो बहुत नुक्सान करके जाती है लेकिन यह भी सच है कि अगर चुनौती के समय उपाय कर लिये जाए और धैर्यशीलता रखी जाए तो मुसीबत और महामारी के असर को खत्म किया जा सकता है। एक सकारात्मक सोच है कि अगर बीमारी या मुसीबत जड़ से खत्म न हो तो हम अपने उपायों से उसमें कमी तो ला ही सकते हैं। हम कोरोना को बीते कल की बात मानते थे क्योंकि इस कोरोना ने देश और दुनिया में लोगों को गहरे जख्म दिए हैं। हमारे देश में भी ऐसे लाखों लोग हैं जिन्होंने अपनों को खोया है लेकिन यह सच है कि मुसीबत और महामारी के इस कठिन मुश्किलों भरे समय में हमने आपदा में अवसर को खोज लिया। वैक्सीनेशन के दम पर हमारा देश दुनिया में कोरोना की मार से सबसे तेजी से उभरने वाला देश है। हमने अपने आपको उपायों के बंधन में बांधा जिनमें लॉकडाउन एक था और हम तेजी से उभरे तथा अपनी अर्थव्यवस्था को भी उभारा लेकिन विशेषज्ञों का यह कहना कि महामारी या कोरोना अभी खत्म नहीं हुआ। यह कभी भी सिर उठा सकता है। पिछले दो महीने से कोरोना फिर सिर उठा रहा है और पहले जैसी परिस्थितियां पैदा न हो आओ पहले से उपाय कर लें। कोरोना का फन इससे पहले कि वार करें हम सावधानीपूर्वक धैर्यशीलता के साथ आगे बढ़ते हुए इसे खत्म कर देंगे। महाराष्ट्र, मुंबई यहां तक कि दिल्ली में पिछले दो हफ्ते से कोरोना के केस बढ़ रहे हैं तो निश्चित रूप से हमें सावधान हो जाना चाहिए। हां घबराने की बात नहीं है लेकिन सावधानी व सतर्कता तो रखनी ही चाहिए। मेरी अनेक डाक्टर मित्रों से बातचीत होती रहती है। मैं उनसे पिछले दिनों दिल्ली एनसीआर में फैल रहे एनफ्ल्यूएंजा को लेकर ज्यादा चितिंत रही हूं क्योंकि लोग इस एनफ्ल्यूएंजा की ही चर्चा करते रहे हैं। यह एक सूखी खांसी है जो कोरोना की तरह घातक तो नहीं लेकिन महीनों किसी को भी परेशान कर सकती है। देश और राज्य सरकारें अलर्ट हैं तथा बराबर लोगों को एडवाइजरी जारी करती रहती हैं कि खुले स्थानों पर जाने से बचें, ज्यादा भीड़ वाले इलाकों में जाना हो तो मास्क लगाएं। जिनको शुगर, हाई बीपी है वो अपना अधिक ध्यान रखें और इसके नाम से घबराए नहीं।

पाठ्यक्रम में संशोधन को लेकर राजनीति

भारत में राजनीति बहुत ही खतरनाक मोड़ की ओर अग्रसर है। मौके बे मौके राजनीति का अवसर खोजने वालो की भारत में कमी नही है। अब सरकार के उस प्रयास पर जो कि वर्षो पहले हो जाना चाहिए उस पर भी राजनीति शुरू हो गई है। वैसे भी देखा जाए तो पाठयक्रमों में मुगलकाल के दौरान के बारे में इतना महिमामण्डन वाला इतिहास पढ़ाया जा रहा है जो वाकई सच नही था। क्योकि उस वक्त मुगलो की सरकार थी उनके सरपरस्त थे इसलिए उन्हे खुश करने के लिए इतिहासकारों ने जो कुछ लिखा उसे ही पाठ्यक्रम का हिस्सा बना दिया गया। अब समय बदला और यह आभास किया गया कि इसमें काफी कुछ गलत है उसे सुधारा जा रहा है तो इस पर भी राजनीतिक रोटियॉ सेंकी जा रही है। खैर देर आए दुरूस्त आए कि तर्ज में आखिर एनसीआरटी की ओर से छठी से लेकर 12वीं क्लास तक के कोर्स में किए गए बदलाव नए शैक्षणिक सत्र से लागू हो गए। इन बदलावों का फैसला पिछले साल ही हो गया था। लेकिन समय की कमी के कारण पिछले सत्र के दौरान ये लागू नहीं किए जा सके थे। एनडीए की सरकार आने के बाद से भी यह तीसरी बार पाठयक्रम में बदलाव किया गया। समय के साथ कोर्स में बदलाव जरूरी भी होता है। एनसीआरटी ने तथ्यों के साथ किए गए बदलाव को गलत नहीं कहा जा सकता कि स्टूडेंट्स पर बोझ कुछ ज्यादा था, जिसे कम करने की जरूरत थी। खासकर, कोरोना महामारी और लॉकडाउन से उपजी स्थितियों के बाद यह जरूरत ज्यादा तीव्रता से महसूस की जा रही थी। इसी मकसद से पिछले साल हर विषय के लिए एक्सपर्ट कमिटी बनाई गई थी और उनकी सिफारिशों के मुताबिक इतिहास, गणित, विज्ञान, भूगोल समेत तमाम विषयों में कंटेंट को कम किया गया। इस आधिकारिक स्पष्टीकरण के बावजूद अगर इन बदलावों को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं तो उसके पीछे कुछ ठोस वजहें हैं। लेकिन जिस तरह से इसका विपक्ष विरोध कर रहा है वह कोरी राजनीति के अलावा कुछ नही, अगर सरकार मनमानी करके बदलाव रख रही है तो विपक्ष तथ्य रखकर इसका विरोध क्यो नही करता, केवल बयान देकर राजनीति करने में क्या होगा। ज्ञात हो कि पिछले साल एक्सपर्ट कमिटी की सिफारिशों के बाद किए गए बदलावों की एनसीआरटी ने सार्वजनिक तौर पर जानकारी दी थी। बहस उन बदलावों को लेकर भी हुई थी। लेकिन जब इस साल के लिए पुस्तकें छप कर आईं तो उनमें कुछ ऐसे बदलाव भी दिखे जो पिछले साल एनसीआरटी की ओर से दी गई जानकारी में शामिल नहीं थे और ये कोई मामूली बदलाव नहीं हैं। इनमें महात्मा गांधी की हत्या और गुजरात में 2002 दंगों के बाद बने हालात से जुड़े महत्वपूर्ण बदलाव हैं। सवाल है कि ये बदलाव कब, कैसे और किनके कहने पर किए गए और इन्हें छुपाया क्यों गया ? दूसरी बात यह कि समकालीन, मध्यकालीन और प्राचीन इतिहास से जुड़े जो अंश हटाए गए हैं, वे उस विमर्श से पूरी तरह मेल खाते दिख रहे हैं जो बीजेपी और आरएसएस की ओर से प्रचारित किया जाता रहा है। इसमें दो राय नहीं कि बीजेपी और आरएसएस ही नहीं, ऐसे तमाम संगठनों को अपनी राय रखने और उसे प्रचारित करने का पूरा हक है, लेकिन जहां तक पाठ्य पुस्तकों में बदलावों का सवाल है तो वे सत्ता में आने वाले दल की मर्जी से संचालित होते नहीं दिखने चाहिए क्योंकि सत्ता में अलग-अलग विचारों वाले दल आते-जाते रहते हैं। इन बदलावों को देश के संविधान में निहित सेकुलर, लोकतांत्रिक, समाजवादी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जुड़े मूल्यों और आदर्शों की कसौटी पर सख्ती से कसे जाने के बाद ही लागू किया जाना चाहिए। अब जान ले कि भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय से संबद्ध एक स्वायत्त संस्था है।राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। इसको एनसीईआरटी के नाम से भी जाना जाता है।1961 में इसकी स्थापना केंद्र और राज्य सरकारों को स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए नीति और कार्यक्रम बनाने पर सुझाव देने के लिए की गई थी। इस संस्था का एक महत्वपूर्ण काम स्तरीय पुस्तकों के प्रकाशन का भी है।पुस्तकों के प्रकाशन में इस संस्था ने वामपंथी लेखकों के प्रभाव में जिस तरह की भाषा और जिस तरह की व्याख्या स्कूली छात्रों को अबतक पढ़ाई है वो एक अलग शोध की मांग करता है। नामवर सिंह से लेकर रोमिला थापर तक एनसीईआरटी की पुस्तकों के लिए नीति निर्धारण करते रहे हैं। परिणाम सबके सामने हैं कि छात्रों को क्या पढाया जा रहा है। ज्ञात हो कक्षा 7 की एनसीईआरटी की इतिहास की पुस्तक में प्रथम अध्याय में ही हिन्दुस्तान शब्द को लेकर व्याख्याएं भ्रमित करने वाली हैं। इसमें कहा गया है कि समय के साथ शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं और जो आज हैं वह आने वाले कल में नहीं रहते। यह बात कुछ सीमा तक ठीक भी है। परन्तु जो उन्होंने उदाहरण लिया है, वह थोड़ा सा भ्रामक है। उन्होंने हिन्दुस्तान शब्द का उदाहरण दिया है।

भारत और भूटान, सदियों पुराने मित्र भाईचारे का प्रमाण

प्रियंका सौरभ

एक मित्रवत और मददगार पड़ोसी के रूप में भारत भूटान की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी रहा है। भूटान भारत की विदेश नीति में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। भारत और भूटान के बीच संबंध विश्वास, सद्भावना और आपसी समझ के स्तंभों पर आधारित है। दोनों पड़ोसियों के बीच घनिष्ठ सभ्यतागत, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं जो सदियों पुराने हैं। भूटान भारत को ग्यागर यानी पवित्र भूमि मानता है, क्योंकि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई थी, जो कि बहुसंख्यक भूटानी लोगों द्वारा पालन किया जाने वाला धर्म है। दोनों देशों को अपने रिश्ते पर गर्व है जो विश्वास, साझा सांस्कृतिक मूल्यों, आपसी सम्मान और सतत विकास में साझेदारी पर आधारित है। भारत और भूटान के बीच संबंध विश्वास, सद्भावना और आपसी समझ के स्तंभों पर आधारित हैं। दोनों पड़ोसियों के बीच घनिष्ठ सभ्यतागत, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं जो सदियों पुराने हैं। भारत-भूटान संबंधों का मूल ढांचा दोनों देशों के बीच 1949 में हस्ताक्षरित मित्रता और सहयोग की संधि है, जिसे 2007 में नवीनीकृत किया गया था। भारत और भूटान के बीच बहु-क्षेत्रीय सहयोग है,व्यापार और आर्थिक संबंध में भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और भूटान में निवेश का प्रमुख स्त्रोत बना हुआ है। 2021 में, भारत ने भारत के साथ भूटान के द्विपक्षीय और पारगमन व्यापार के लिए सात नए व्यापार मार्गों को खोलने की औपचारिकता को औपचारिक रूप दिया। भूटान से भारत में 12 कृषि-उत्पादों के औपचारिक निर्यात की अनुमति देने के लिए नई बाजार पहुंच भी प्रदान की गई। डिजिटल सहयोग के लिए हाल के दिनों में, सहयोग के पारंपरिक दायरे से परे नए क्षेत्रों में सहयोग हुआ है। उदाहरण के लिएरू तीसरे अंतर्राष्ट्रीय इंटरनेट गेटवे जैसे डिजिटल बुनियादी ढांचे की स्थापना। इसके अलावा, भारत के राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ भूटान के ड्रुकरेन का एकीकरण ई-लर्निंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सहयोग है। भारत न केवल भूटान का सबसे बड़ा विकास भागीदार है बल्कि माल और सेवाओं में इसके व्यापार के स्त्रोत और बाजार दोनों के रूप में सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार भी है। भारत भू-आबद्ध भूटान को न केवल पारगमन मार्ग प्रदान करता है, बल्कि जलविद्युत, अर्ध-तैयार उत्पाद, फेरोसिलिकॉन और डोलोमाइट सहित भूटान के कई निर्यातों के लिए सबसे बड़ा बाजार भी है। वित्तीय सहयोगध्एकीकरण के तहत रुपे परियोजना का पहला चरण भूटान में शुरू किया गया। 2021 में भारत का भारत इंटरफेस फॉर मनी भी लॉन्च किया गया। अंतरिक्ष सहयोग द्विपक्षीय सहयोग का एक नया और संभावना-युक्त क्षेत्र है। भारत और नेपाल के दोनों प्रधानमंत्रियों ने संयुक्त रूप से 2019 में थिम्फू में दक्षिण एशिया उपग्रह के ग्राउंड अर्थ स्टेशन का उद्घाटन किया, जो इसरो के सहयोग से बनाया गया था। इसके अलावा, भारत-भूटान सैट को 2022 में इसरो के पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल द्वारा अंतरिक्ष में लॉन्च किया गया था। भूटान के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी पनबिजली सहयोग द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग का मूल है। मांगदेछु सहित 4 पनबिजली परियोजनाएं (भ्म्च) पहले से ही भूटान में चालू हैं और भारत को बिजली की आपूर्ति कर रही हैं। शैक्षिक, सांस्कृतिक सहयोग और लोगों के बीच आदान-प्रदान हेतु भारत और भूटान के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में घनिष्ठ द्विपक्षीय सहयोग है। चिकित्सा, इंजीनियरिंग आदि सहित विभिन्न विषयों में भारत में अध्ययन करने के लिए भूटानी छात्रों के लिए भारत सरकार द्वारा सालाना 950 से अधिक छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। कई भूटानी तीर्थयात्री बोधगया, राजगीर, नालंदा, सिक्किम, उदयगिरि और अन्य बौद्ध स्थलों की भारत में यात्रा करते हैं।रणनीतिक संबंधों को मजबूत करते हुए, भारत ने 1961 में भूटानी सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने के लिए भूटान में अपनी सैन्य प्रशिक्षण टीम तैनात की और तब से भूटानी सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है। सुरक्षा और सीमा प्रबंधन के मुद्दों, खतरे की धारणा, भारत-भूटान सीमा प्रवेश निकास बिंदुओं के समन्वय, और अन्य पहलुओं के बीच वास्तविक समय की जानकारी साझा करने से संबंधित कई कार्य नियमित रूप से दोनों देशों द्वारा किए जा रहे हैं। समय के साथ भारत और भूटान के बीच संबंध ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार और व्यापार, सुरक्षा और खुफिया जानकारी साझा करने, डिजिटलीकरण, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और संरक्षण जीव विज्ञान क्षेत्रों सहित व्यापक मुद्दों पर व्यापक साझेदारी और सहयोग में परिपक्व हो गए हैं। अतीत में विपरीत परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण समय में भारत हमेशा भूटान के साथ खड़ा रहा और भूटान ने इसे स्वीकार किया। एक मित्रवत और सहायक पड़ोसी के रूप में, भारत भूटान की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी रहा है, जो समय-समय पर आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं और जो भी आवश्यक हो, की आपूर्ति करने वाले भूटान को दिए गए समर्थन से उदाहरण बन गया है। भारत और भूटान के बीच सामंजस्यपूर्ण और टिकाऊ संबंधों के लिए कुछ मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे चाइना फैक्टर देश की भू-रणनीतिक अवस्थिति भूटान को भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा की धारणा में बहुत महत्वपूर्ण बनाती है। चीन और भूटान के बीच सीमा समझौते की संभावना को इस क्षेत्र में भारत के सामरिक हितों पर इसके प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। विशेषज्ञों द्वारा बताए गए मुद्दों में से एक भूटान के प्रति भारत का पैतृक रवैया है। भारत-भूटान संबंधों में संकट 2013 में स्पष्ट रूप से अपनी विदेश नीति में विविधता लाने के लिए भूटानी बोली को विफल करने के भारत के कथित प्रयास पर फूट पड़ा। आंतरिक राजनीति में दखल पर आलोचकों का तर्क है कि भूटान की आंतरिक राजनीति में कई बार भारत की ओर से हस्तक्षेप होता रहा है ।जलविद्युत परियोजनाओं के संबंध में उठाए गए मुद्दों पर विशेषज्ञों का तर्क है कि जलविद्युत परियोजनाओं पर सहयोग करने के आर्थिक लाभों में कमी आई है। ब्याज दरें बढ़ गई हैं और बिजली की प्रति यूनिट मुनाफा कम हो गया है, जिससे भूटान के कर्ज में बड़ी वृद्धि हुई है।

भारत और भूटान के बीच संबंध विश्वास, सद्भावना और आपसी समझ के स्तंभों पर आधारित है। दोनों पड़ोसियों के बीच घनिष्ठ सभ्यतागत, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं जो सदियों पुराने हैं। भूटान भारत को ग्यागर यानी पवित्र भूमि मानता है, क्योंकि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई थी, जो कि बहुसंख्यक भूटानी लोगों द्वारा पालन किया जाने वाला धर्म है। एक मित्रवत और मददगार पड़ोसी के रूप में भारत भूटान की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी रहा है। भूटान भारत की विदेश नीति में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। इसलिए, उपरोक्त मुद्दों को संबोधित करते हुए स्थायी संबंध बनाए रखने के लिए और कदम उठाए जाने चाहिए।

अमेरिका, रूस और चीन के आपसी टकराव

व्यवसायिक लाभ वैश्विक शांति से ऊपर, युद्ध की सम्भावना

संजीव ठाकुर

अमेरिका ने चीन और ताइवान के संबंधों को लेकर ताइवान का खुलकर साथ देने की बात कही जिससे चीन ने आक्रामक होकर इसे अपने अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप कहां है और कहा है कि यदि हमारे अंदरूनी मामले में कोई हस्तक्षेप करेगा तो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दूसरी तरफ यूक्रेन को लेकर रूस अब बहुत संवेदनशील और आक्रामक हो गया हैस यूक्रेन से रूस ने अब निर्णायक पारी खेलने का मन बना लिया हैस इस तरह अमेरिका यूक्रेन तथा ताइवान को साथ देने के चक्कर में रूस और चीन से सीधा-सीधा टकराने के मूड में आ गया है। यह अलग मुद्दा है की सांडो की लड़ाई में खेतों की मेढ़ बरबाद जरूर होती हैं। इन तीनों महा बलियों की लड़ाई में अन्य पड़ोसी देशों की शांती भंग हो सकती है। दूसरी तरफ अमेरिकी प्रशासन पूरी तरह से यूक्रेन का साथ देने की कटिबद्ध है, एवं पूर्वी यूरोप में अमेरिकी राष्ट्रपति एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में रुस पर दबाव डालने के लिए सैन्य बल भेजने की बात कही हैस अमेरिकी राष्ट्रपति की प्रेस वार्ता के हवाले अमेरिकी रक्षा मंत्री ने कहा कि रूस ने सीमा के आसपास बड़ी संख्या में सैन्य जमवाड़ा कर चुका है, एवं रूसी बलों को तैनात किया हैस जबकि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के पास अन्य सैन्य बल तथा बातचीत के जरिए का विकल्प भी मौजूद हैस वर्तमान की परिस्थितियों में यूक्रेन की सीमा पर लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूक्रेन के राष्ट्रपति से कहा कि रूस फरवरी या मार्च के प्रथम सप्ताह तक बड़ा हमला कर सकता हैस व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा प्रवक्ता एमिली होर्न ने बताया की अमेरिकी राष्ट्रपति ने आशंका जताई है कि रूस फरवरी में यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण कर सकता है। अमेरिकी रक्षा मंत्री लाएड ऑस्टिन ने कहा कि हमारा मानना है कि यूक्रेन पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का यह अंतिम फैसला नहीं है, जबकि उनके पास कई विकल्प खुले हुए हैं। यूक्रेन पर हमला करने की निसंदेह रूस के पास संपूर्ण क्षमताएं हैं। अमरीकी प्रशासन राष्ट्रपति रक्षा मंत्री ने पुतिन से यूक्रेन पर तनाव कम करने की अपील भी की है। रूस ने कहा है कि वार्ता के द्वारा भी खुले हुए यदि यूक्रेन अपनी हठधर्मिता से पीछे हटता है तो रूस वार्ता के माध्यम से एक मध्य मार्ग के बारे में विचार कर सकता है। पर यूक्रेन अपनी तीनों शर्तों पर अड़ा हुआ वह क्रीमिया महाद्वीप को वापस लेना चाहता है और नाटो की सदस्यता भी चाहता है, रूस द्वारा पाइप लाइन बिछाकर उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर करना चाहता हैं जिसे वह कभी बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं रहेगा। स्पष्ट है कि इस मामले में अमेरिका,ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देश यूक्रेन के साथ साथ कंधे से कंधा मिलाकर सैन्य बल की मदद करने को तैयार है। रूस के पास अब सैन्य बलों द्वारा यूक्रेन पर चढ़ाई करने के अलावा कोई मार्ग शेष नहीं रह जाता है। ऐसे में अमेरिकी राष्ट्रपति की यह आशंका कि रूस यूक्रेन पर फरवरी एवं मार्च के प्रथम सप्ताह में बड़ा हमला कर सकता है निर्मूल नहीं है। अमेरिका ने निर्णय लिया है कि वह पूर्वी यूरोप के सीमा पर एक बड़ा सैन्य बल रूस को टक्कर देने के लिए भेजेगा ।संभवत यह रूस पर दबाव डालने के लिए एक कूटनीतिक घोषणा एवं चाल हो सकती है। कुल मिलाकर यूक्रेन की सीमा पर जिस तरह से सैनिकों का जमवाड़ा इकट्ठा हो गया है, उससे जंग की आशंकाएं बढ़ गई हैं। अमेरिका के ज्वाइंट चीफऑफस्टाफके आर्मी जनरल मार्क मिले ने यूक्रेन के निकट तैनात रूसी सेना गंभीर तस्वीर पेश की है। उन्होंने कहा है कि यूक्रेन की सीमा पर उसने जमीन,

वायु, जल क्षेत्र में बलों की तैनाती कर दी है, साथ ही रूस के पास साइबर तथा इलेक्ट्रॉनिक युद्ध की क्षमताएं भी हैं। इसके अलावा उसके पास विशेष अभियान दल भी हैं। मिले के अनुसार यह अत्यंत चिंताजनक एवं विचारणीय प्रश्न है कि इसके पूर्व रूस की इतनी लंबी चौड़ी सेना की तैनाती कभी भी यूक्रेन की सीमा पर नहीं देखी गई है। इसका मतलब सीधा और साफहै कि रूस युद्ध के प्रति एकदम गंभीर है एवं यूक्रेन को सबक सिखाना चाहता है। पर इसे वैज्ञानिक विश्लेषक अधिनायकवाद इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाला बताते हैं, जिससे विश्व युद्ध की आशंका को बढ़ावा मिल सकता है, और विश्व युद्ध होता है तो बहुत बड़ा विनाशकारी युद्ध होने की पूरी संभावना है। मिले ने पुतिन से संघर्ष के बदले कूटनीतिक मार्ग अपनाने की अपील की है। उल्लेखनीय है कि रूस ने यूक्रेन की सीमा के पास एक लाख से ज्यादा सैनिक तथा जमीन से जमीन मारक क्षमता वाले टैंक तथा लड़ाकू हवाई जहाज तैनात करके रखे हैं। ऐसे में यूक्रेन जैसे छोटे देश के पास अमेरिका ब्रिटेन एवं अन्य यूरोपीय देश और नाटो देश के सदस्यों से सैन्य दल लेने के अलावा कोई और रास्ता शेष नहीं बचा है। यह तो तय है कि अमेरिका यूक्रेन की मदद करने के लिए कटिबद्ध है पर बदली हुई परिस्थितियों में यूक्रेन का साथ देने के लिए कहीं अमेरिका अलग-अलग ना पड़ जाए, इसके अलावा उसने चीन को इस मामले में दखल नहीं देने चेतावनी भी दी है। फिलहाल चीन ताइवान मामले में अमेरिका के सीधा सामने है। क्योंकि अमेरिका ताइवान को भी मदद करने का वादा कर चुका है, ऐसे में अमेरिका को कई तरफ अपनी सेनाएं भेजने का काम करना होगा। कुल मिलाकर यूक्रेन, रूस,चीन, ताइवान को लेकर वैश्विक स्तर पर अशांति का माहौल बना हुआ है। कूटनीतिक बातचीत कर इसका हल निकाल कर वैश्विक शांति का संदेश देना चाहिए।

ईडी और सीबीआई छापे पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला भ्रष्टाचार विरोधी अभियान को और तेज करेगा

अशोक मधुप

हाल ही में मानहानि के एक मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को न्यायालय ने दो साल की सजा सुनाई। सजा न्यायालय ने की किंतु सभी दल एक सुर में दोष केंद्र सरकार और भाजपा को दे रहे हैं। कांग्रेस तो इस मामले को लेकर आंदोलन भी शुरू कर चुकी है। सुप्रीम कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के दुरुपयोग से जुड़ी कांग्रेस के नेतृत्व में 14 विपक्षी दलों की याचिका पर सुनवाई से इंकार कर दिया है। इसके बाद अब यह तय हो गया कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो की जांच में और ज्यादा तेजी आएगी। ये दोनों संगठन और अन्य केंद्रीय जांच एजेंसियां अपनी कार्रवाई और तेज करेंगी। सुप्रीम कोर्ट के प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के दुरुपयोग से जुड़ी कांग्रेस के नेतृत्व में 14 विपक्षी दलों की याचिका पर सुनवाई से इंकार के बाद विपक्षी दलों ने अपनी याचिका वापस ले ली। याचिका में विपक्षी नेताओं के खिलाफ केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जैसी केंद्रीय जांच एजेंसियों के मनमाने उपयोग का आरोप लगाया गया था। याचिका में गिरफ्तारी, रिमांड और जमानत जैसे मामलों को नियंत्रित करने वाले दिशा-निर्देशों का नया सेट जारी करने की मांग की गई थी । विपक्षी दलों की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि 2013-14 से 2021-22 तक सीबीआई और ईडी के मामलों में 600 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ईडी की ओर से 121 राजनीतिक नेताओं की जांच की गई है। जिनमें से 95 प्रतिशत नेता विपक्षी दलों से हैं। सीबीआई की 124 जांचों में से 95 प्रतिशत से अधिक विपक्षी दलों से हैं। सिंघवी ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि राजनीतिक विरोध की वैधता पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने सिंघवी से पूछा कि क्या हम इन आंकड़ों की वजह से कह सकते हैं कि कोई जांच या कोई मुकदमा नहीं होना चाहिए? क्या नेताओं को इससे अलग रखा जा सकता है? सर्वोच्च कोर्ट का कहना है कि अंततः एक राजनीतिक नेता मूल रूप से एक नागरिक होता है और नागरिकों के रूप में हम सभी एक ही कानून के अधीन हैं। इस पर सिंघवी ने कहा कि पक्षकार नहीं चाहते कि याचिका से भारत में कोई लंबित मामला प्रभावित हो और वे मौजूदा जांच में हस्तक्षेप करने के लिए भी नहीं कह रहे हैं। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला की पीठ ने कहा कि किसी मामले के तथ्यों से संबंध के बिना सामान्य दिशानिर्देश देना खतरनाक होगा। याचिका पर विचार करने में शीर्ष अदालत की अनिच्छा को भांपते हुए राजनीतिक दलों की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता एएम सिंघवी ने याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी। पीठ ने आदेश दिया कि अधिवक्ता इस स्तर पर याचिका वापस लेने की अनुमति चाहते हैं। याचिका तदनुसार वापस ली गई, मानते हुए खारिज की जाती है। ये याचिका कांग्रेस, द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक), राष्ट्रीय जनता दल (राजद), भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस), तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), आम आदमी पार्टी (आप), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा), शिवसेना (यूबीटी), झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो), जनता दल यूनाइटेड (जदयू), मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा), समाजवादी पार्टी (सपा) और जम्मू-कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस की ओर से दायर की गई थी। इस याचिका को दायर करने वाले दलों ने यह नहीं सोचा कि पुलिस समेत सभी सरकारी जांच एजेंसी जांच करती हैं। केस कोर्ट में सबूतों के आधार पर तय होता है। यदि सबूत नहीं होंगे तो केस खुद ही खारिज हो जाएगा। एक दो मामले में न्यायालय इस तरह की टिप्पणी कर भी चुका है। दूसरे राजनैतिक दबाव में भी कोई एजेंसी किसी गलत व्यक्ति को आरोपी नहीं बनाएगी। क्योंकि न्यायालय में आरोप साबित नहीं करने पर बदनामी उसी की होगी। विपक्षी दलों के आरोप पर प्रवर्तन निदेशालय ने विपक्षी पार्टियों की ओर से लगाए जा रहे 'टारगेट कर कार्रवाई' के आरोपों के बीच एक नया डेटा जारी किया है। प्रवर्तन निदेशालय ने अपने डेटा में दावा किया है कि मनी लॉन्ड्रिंग को लेकर उसकी ओर से दर्ज मामले में जिनकी सुनवाई पूरी हो चुकी है, उसमें सजा की दर वास्तव में 96 प्रतिशत है। प्रवर्तन निदेशालय अनुसार, एजेंसी की ओर से 31 जनवरी तक 513 लोगों को गिरफ्तार की गयी है। 1.15 लाख करोड़ रुपए से अधिक की संपत्ति कुर्क की गयी है। ईडी के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी 2023 तक ट्रायल पूरा हो चुके 25 मामलों में 24 मामलों में आरोप सही साबित पाए गए हैं। इनमें 45 अभियुक्तों को सजा हुई है। एक तरफईडी 96 फीसदी मामलों में दोष सिद्धि का दावा कर रही है तो दूसरी ओर राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) 94 फीसदी और सीबीआई 68 फीसदी मामलों में सजा का दावा करती है। ये आंकड़े ये बताने के लिए काफी हैं कि कार्रवाई की जद में आए सभी आरोपी दूध के धुले नही हैं। उनमें से अधिकांश भ्रष्टाचार में लिप्त रहे हैं। वह सब अपने पर कार्रवाई और गिरफ्तारी के डर से एकत्र हुए हैं। एक बात और कोर्ट की ओर से उनकी अपील खारिज करने के बाद शोर मचाने के अलावा अब कोई विकल्प नहीं बचा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछली बार लाल किले से घोषणा कर चुके हैं कि भ्रष्टाचार के मामलों में तेजी होगी। नो टोलरेंस की नीति अपनाई जाएगी। सर्वोच्च न्यायालय के इस मामले को खारिज करने से एक दिन पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सीबीआई के डायमंड जुबली समारोह को संबोधित करते हुए उसे फ्री हैंड दे दिया। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि मौजूदा सरकार में भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि देश और इसके नागरिकों की इच्छा है कि किसी भी भ्रष्ट व्यक्ति को बख्शा नहीं जाना चाहिए। पीएम मोदी ने अपने संबोधन में सीबीआई के कामकाज की खूब तारीफकी। उन्होंने कहा, श्साल 2014 के बाद हमारा पहला दायित्व, व्यवस्था में भरोसे को फिर कायम करने का रहा। इसलिए हमने काले धन को लेकर, बेनामी संपत्ति को लेकर मिशन मोड पर एक्शन शुरू किया। जहां भ्रष्टाचार होता है, वहां युवाओं को उचित अवसर नहीं मिलते। वहां सिर्फ एक विशेष इकोसिस्टम ही फलता-फूलता है। भ्रष्टाचार प्रतिभा का सबसे बड़ा दुश्मन होता है और यहीं से भाई-भतीजावाद, परिवारवाद को बल मिलता है। जब भाई-भतीजावाद और परिवारवाद बढ़ता है, तो समाज का, राष्ट्र का सामर्थ्य कम होता है। जब राष्ट्र का सामर्थ्य कम होता है तो विकास प्रभावित होता है। उन्होंने कहा, श्मुख्य रूप से सीबीआई की जिम्मेदारी भ्रष्टाचार से देश को मुक्त करने की है। भ्रष्टाचार कोई सामान्य अपराध नहीं होता। भ्रष्टाचार, गरीब से उसका हक छीनता है, अनेक अपराधों को जन्म देता है। भ्रष्टाचार, लोकतंत्र और न्याय के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा होता है।श् प्रधानमंत्री ने यह भी कहा, श्आज देश में भ्रष्टाचार के खिलाफलड़ाई लड़ने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति में कोई कमी नहीं है। आपको कहीं भी हिचकने, कहीं रूकने की जरूरत नहीं है। आज विपक्ष अपने साथ के नेताओं पर कार्रवाई होने पर आरोप ही लगाता है। इसके अलावा उसके पास कहने को कुछ नही हैं। हाल ही में मानहानि के एक मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को न्यायालय ने दो साल की सजा सुनाई। सजा न्यायालय ने की किंतु सभी दल एक सुर में दोष केंद्र सरकार और भाजपा को दे रहे हैं। कांग्रेस तो इस मामले को लेकर आंदोलन भी शुरू कर चुकी है। विपक्ष दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के विरुद्ध कार्रवाई होने पर एकत्र होना शुरू हुआ।

बीजेपी सांसद ने की आरिफ और सारस को मिलाने की मांग, कहा, इनका प्रेम निश्छल और पवित्र है

संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश में आरिफऔर सारस की दोस्ती की चर्चाएं खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। यूं कहें तो दोनों के बिछड़ने के बाद सूबे में विपक्ष के पास और कोई मुद्दा ही नहीं बचा है या दिखाई नहीं दे रहा है। पहले लगातार कई दिनों तक सपा मुखिया अखिलेश यादव के ट्वीट में आरिफऔर सारस के बीच का प्यार अमर रहा। लेकिन अब इस दोस्ती की कहानी को बीजेपी के सांसद ने उजागर किया है और दोनों को मिलाने की मांग भी किया है। बता दें कि मंगलवार को आरिफ सारस से मिलने के लिए कानपुर के चिड़िया घर में पहुंचे जहां, सारस को रखा गया है। आरिफको देखते ही सारस के खुशी से झूमने लगा। बंद बाड़े में ही कूद-कूद कर नाचने लगा। इस घटना की वीडियो देखते ही देखते सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। जिसके बाद पीलीभीत से भाजपा सांसद वरुण गांधी ने ट्वीट करते हुए लिखा कि ष्एक दूसरे को सामने पा कर इन दोनों दोस्तों की खुशी बता रही है कि इनका प्रेम कितना निश्छल और पवित्र है। यह खूबसूरत जीव स्वच्छंद आकाश में उड़ने के लिए बना है, पिंजरे में रहने के लिये नहीं।उसे उसका आसमान, उसकी आजादी और उसका मित्र वापिस लौटा दीजिए। बताया जा रहा है कि आरिफऔर सारस की दोस्ती की खबर वायरल होने से पहले अच्छी चल रही थी। फिर इस दोस्ती की खबर पूर्व मुख्यमंत्री और सपा के मुखिया अखिलेश यादव को मिली। जिसके बाद वह एक दिन आरिफऔर सारस से मिलने के लिए चल दिए। दोनों की दोस्ती की कहानी को सच देख अखिलेश बहुत खुश हुए और इस सारस दीदार की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल दिए। जिसके बाद इस अनोखी दोस्ती की कहानी इतना फैल गया कि वन विभाग तक पहुंच गया। कुछ दिनों बाद कानूनी कार्रवाई करते हुए वन विभाग की टीम ने दोनों को आखिराकर जुदा कर दिया। अमेठी के रहने वाले आरिफएक नीजी चौनल से बताते हैं कि सारस से उनकी दोस्ती अगस्त- 2022 में शुरू हुई थी। आरिफ बताते हैं, फ्रोज की तरह मैं अपने खेत पर काम करने जा रहा था। तभी मुझे रास्ते में एक बड़ा सा पंख दिखाई दिया। मैं थोड़ा आगे बढ़ा तो बड़ा सा सारस जमीन पर पड़ा हुआ था। पहले मैं उसको देखकर डर गया। पहली बार सारस को सामने से देखा था। इसकी चोंच बहुत बड़ी थी। मुझे डर लग रहा था कि कहीं ये मुझे मार न दे। मैं कुछ देर वहीं पर खड़ा रहा। उसको लगातार देख रहा था। वो हिल भी नहीं पा रहा था। उसके पैर पर चोट थी। खून निकल रहा था। किसी तरह हिम्मत करके मैं उसके पास गया। उसके ऊपर हाथ फेरा तो वो थोड़ा सा मेरी तरफ घूम गया। इसके बाद मैंने सारस को पानी पिलाया। फिर उसको अपने खेत पर ले गया।

कोरोना की नई गाइडलाइन जारी

स्कूल, दफ्तर में बिना मास्क नो एंट्री, 7 महीने बाद एक दिन में मिले 97 केस

संवाददाता

लखनऊ। यूपी में कोरोना तेजी से बढ़ रहा है। राजधानी लखनऊ में 7 महीने बाद बुधवार को एक दिन में 97 पॉजिटिव केस मिले हैं। इसके बाद प्रशासन ने कोरोना को लेकर नई गाइडलाइन जारी कर दी। इसमें स्कूल, दफ्तर, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और पब्लिक प्लेस पर मास्क को अनिवार्य कर दिया गया है। साथ ही हाथ नहीं मिलाने की भी बात कही गई है। हालांकि, मास्क नहीं लगाने पर किसी जुर्माने का अभी प्रावधान नहीं किया गया है। प्रदेश में बुधवार को 24 घंटे में 446 नए मरीज सामने आए हैं। वहीं, 149 मरीज ठीक हुए हैं। इसके साथ एक्टिव केस की संख्या 1791 पहुंच गई। पॉजिटिविटी रेट 1.63 है। सबसे ज्यादा मरीज राजधानी लखनऊ में हैं। सितंबर-2022 के बाद राजधानी में 97 केस सामने आए हैं। मंगलवार को 402 नए केस आए थे। जबकि सोमवार को 176 केस मिले थे। बुधवार को लखनऊ डीएम सूर्यपाल गंगवार और सीएमओ डॉ. मनोज अग्रवाल भी इंटीग्रेटेड कोविड कमांड कंट्रोल सेंटर पहुंचे। वहां कोविड प्रबंधन की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।। डीएम ने वीडियो जारी कर लोगों से मास्क पहनने और सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने की अपील की। इसके कुछ ही देर बाद लखनऊ में कोरोना की नई गाइडलाइन जारी कर दी गई। इसमें मास्क अनिवार्य किया गया है। यूपी में 13 दिन के भीतर प्रदेश में 2763 पॉजिटिव केस आ चुके हैं। इस दौरान कोरोना के एक्टिव केस 352 से बढ़कर 1791 हो गए हैं। यानी 508: से ज्यादा का इजाफा हुआ है। बुधवार सुबह आई रिपोर्ट में 9 जिले श्रावस्ती, कौशांबी, महोबा, कुशीनगर, कानपुर देहात, इटावा, फिरोजाबाद, बदायूं, शाहजहांपुर में एक भी केस नहीं हैं।लखनऊ में 97 पॉजिटिव केस (एक्टिव केस - 403) हैं। वहीं गौतमबुद्ध नगर यानी नोएडा में 69 पॉजिटिव मरीज (एक्टिव केस - 351) और गाजियाबाद में 50 (एक्टिव केस 232) मिले हैं। इसके अलावा वाराणसी में 11 पॉजिटिव केस (एक्टिव केस- 55) मिले हैं। आगरा में 14 (एक्टिव केस - 48), प्रयागराज में 17 (एक्टिव केस - 47) और मेरठ में 18 (एक्टिव केस - 38) केस सामने आए हैं। इस दौरान 49 हजार 444 सैंपल की जांच की गई। पिछले 24 घंटे में कुल 49 हजार 444 सैंपल की जांच हुई हैं। इनमें से जिला अस्पताल में 14 हजार 234 जांच की गई। वहीं मेडिकल कॉलेज में 10 हजार 615 जांच की गई। निजी लैब में 484 सैंपल की जांच की गई। इसके अलावा एंटीजन और ट्रू नॉट टेस्ट से भी सैंपल की जांच की गई। वहीं, जिले की बात करें तो, कानपुर नगर में 1179 जांच, अयोध्या में 1242, गाजियाबाद में 2197 सैंपल की जांच की गई। इसके अलावा मऊ में 96 और भदोही में 1073 सैंपल की जांच हुई। लखनऊ में 2627 सैंपल की जांच हुई है।

संक्षिप्त समाचार

राज्य संग्रहालय लखनऊ एवं प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय नई दिल्ली के मध्य एमओयू साइन

संवाददाता, लखनऊ। राज्य संग्रहालय, लखनऊ प्रदेश का प्रतिष्ठित प्राचीनतम बहुउद्देश्यीय संग्रहालय है, जहाँ पुरातत्व, प्राकृतिक इतिहास, सज्जा कला, कलात्मक वस्तुएं एवं मुद्राशास्त्र से सम्बन्धित उत्कृष्ट कलाकृतियों का अद्भुत संग्रह है। कलाकृतियों के संरक्षण, प्रदर्शन, शोध तथा प्रकाशन के साथ संग्रहालय द्वारा समय-समय पर अस्थाई ,स्थाई प्रदर्शनी वीथिकाओं का पुनर्गठन, तकनीकी अधिकारियों, कर्मचारियों हेतु कार्यशाला प्रबुद्ध वर्ग, शोधार्थियों हेतु सेमिनार, कला अभिरूचि पाठ्यक्रम एवं विविध शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।देश-विदेश की धरोहर से सम्बन्धित जानकारी को देश के विभिन्न अंचलों तक पहुँचाने एवं राज्य संग्रहालय, लखनऊ के तकनीकी अधिकारियों,कर्मचारियों के ज्ञान वर्धन तथा शैक्षिक कार्यक्रमों में विविधता लाये जाने के उद्देश्य से शासन कीअपेक्षानुसार राज्य संग्रहालय लखनऊ एवं देश के अन्य संग्रहालयों ,संस्थाओं के मध्य एमओयू की कार्यवाही निरन्तर की जा रही है। राज्य संग्रहालय लखनऊ एवं राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली के मध्य एमओयू की कार्यवाही आज 12 अप्रैल को पर्यटन भवन गोमती नगर में सम्पन्न हुयी। देश की स्वतन्त्रता की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर 1972 में स्थापित प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली पर्यावरण पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रकृति के संरक्षण की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। यह संग्रहालय प्राकृतिक धरोहरों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए भारत की स्वतन्त्रता के रजत जयन्ती समारोह में राष्ट्रीय स्तर की संस्था के रूप में नामित की गयी थी। राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, पर्यावरण शिक्षा को समर्पित संस्था है।

बीकेटी में पटाखे की दुकान में धमाका, तीन लोग गंभीर रूप से घायल

संवाददाता

लखनऊ। बख्शी का तालाब क्षेत्र के इटौंजा थाना इलाके में पटाखे की दुकान में धमाका हो गया। बुधवार हुए धमाके में तीन लोग गम्भीर रूप से झुलस गए। जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का जायजा लिया। लोगों से घटना को लेकर जांच पड़ताल की। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इटौजा कस्बे के महोना इलाके में बुधवार सुबह एक पटाखे की दुकान में तेज धमाका हुआ। हादसे में दुकान मालिक व दो कर्मचारी झुलस गए। सीएचसी में प्राथमिक उपचार कराने के बाद तीनों को सिविल अस्पताल रेफर किया गया। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। दमकल की टीम भी मौके पर मौजूद है। जांच पूरी होने के बाद धमाके की वजह साफ होगी। महोना में आरिफ की पटाखे की दुकान है। डीसीपी नॉर्थ एसएम कासिम आब्दी ने बताया कि बुधवार सुबह दुकान में आरिफव उनके कर्मचारी धौहरारा लखीमपुर के आमीन व अटरिया सीतापुर के रहमत अली मौजूद थे। पटाखा बनाने का काम कर रहे थे। तभी अचानक से तेज धमाका हो गया। धमाका इतना तेज था कि आसपास दहशत फैल गई। दुकान में मौजूद तीनों लोग झुलस गए। इलाकाई लोगों ने घायलों को इटौंजा सीएचसी पहुंचाया। वहां से उनको सिविल रेफर किया गया। आरिफकी हालत नाजुक है। डीसीपी ने बताया कि जांच में पता चला है कि आरिफ के पास पटाखा दुकान व भंडारण का लाइसेंस है। उसका सत्यापन कराया जा रहा है। धमाका कैसे हुआ, इसकी तफ्तीश की जा रही है।

पेंशन बहाली की मांग को लेकर प्रधानमंत्री को ज्ञापन

लखनऊ में आचार संहिता के चलते 18 मई को होगा धरना प्रदर्शन

संवाददाता

लखनऊ। इप्सेफके आह्वान पर पेंशन बहाली की मांग को लेकर आज देश व्यापी धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। प्रदर्शन कर प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजा गया ।नगर निकायों केचुनाव आचार संहिता धारा 144 लगने केकारण उत्तर प्रदेश में 11अप्रैल की जगह 18 मई को प्रदर्शन धरना होगा। प्रधानमंत्री को जनपदों द्वारा ज्ञापन प्रेषित किया गया है इंडियन पब्लिक सर्विस इंप्लाइज फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष वी पी मिश्र ने बताया कि पुरानी पेंशन बहाली सरकारी संस्थानों में निजीकरण रोकने आउटसोर्सिंग संविदा कर्मचारियों के नियमितीकरण एवं राष्ट्रीय वेतन आयोग के गठन की मांग को लेकर आज देशभर के सभी प्रदेशों में धरना प्रदर्शन करके प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजकर मांग की गई कि मांगों पर जल्द निर्णय घोषित किया जाए वरना कर्मचारी परिवार का नारा होगा कि वह अपना वोट उसको देंगे जो इप्सेफ की मांग पूरी करने का वादा करेगा। प्रेमचंद्र महासचिव ने बताया कि इप्सेफ द्वारा सभी सांसदों विधायकों मंत्रियों एवं प्रधानमंत्री को कई बार ज्ञापन भेजकर मांग की गई कि अंग्रेजों के समय से मिल रही पुरानी पेंशन बहाल की जाए तथा अन्य तीनों मांगों पर मिल बैठकर निर्णय घोषित किया जाए परंतु खेद है कि भारत सरकार ने मांगों पर न तो बैठक की और निर्णय किया जिसके कारण देशभर के कर्मचारी आंदोलनरत हैं और ऐसा निर्णय लेना पड़ा है उन्होंने बताया कि दिल्ली के कर्मचारियों ने पहली बार बढ़-चढ़कर आंदोलन किया। शशि मिश्रा उपाध्यक्ष एवं अतुल मिश्रा राष्ट्रीय सचिव ने बताया कि उत्तर प्रदेश के 75 जनपदों के पदाधिकारियों ने बैठक करके प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजकर रोष व्यक्त किया है। उन्होंने बताया कि स्थानीय निकायों की चुनाव की आचार संहिता एवं धारा 144 लागू किए जाने से आज प्रदर्शन स्थगित करके अब 18 मई को समस्त जनपदों में धरना प्रदर्शन किया जाएगा। प्रधानमंत्री को समस्त जनपदों द्वारा द्वारा प्रधानमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया जा चुका है। इप्सेफद्वारा प्रधानमंत्री से पुन: आग्रह किया गया कि करोड़ों कर्मचारी परिवार के आक्रोश को नजरअंदाज न करें इससे सत्ताधारी दल को ही चुनाव में क्षति उठानी पड़ेगी इससे अपने प्रधानमंत्री से कर्मचारी परिवार की नाराजगी दूर करने की अपील की है।

एमबीए के छात्र पढ़ेंगे आध्यात्मिकता और वैदिक विजडम

एकेटीयू के पाठ्यक्रम में किया जाएगा बदलाव, एक साल में एग्जिट ऑप्शन भी मिलेगा

संवाददाता

लखनऊ। एकेटीयू यानी डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय से एमबीए करने वाले छात्र अब आध्यात्मिकता और वेदिक विजडम के महारथी भी बन सकेंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति की पहल पर पाठ्यक्रम में इस बदलाव को लाया गया हैं। इसके अलावा एनईपी के तहत स्टूडेंट्स को मिलने वाली तमाम सुविधाओं को भी नए पाठ्यक्रम में जोड़ा जाएगा। दरअसल प्रबंधन शास्त्र के पाठ्यक्रम में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत बदलाव के लिए समिति की बैठक हुई। बैठक में समिति ने एमबीए के नए पाठ्यक्रम के प्रस्ताव को रखा। जिसके तहत छात्र एमबीए प्रथम वर्ष करने के बाद यदि नौकरी में जाना चाहते हैं तो उन्हें पीजीडीबी। की डिग्री दी जाएगी यानी उन्हें एमबीए में एग्जिट का अवसर मिलेगा। इससे न केवल उनका 1 साल बर्बाद होने से बच जाएगा बल्कि उन्हे डिग्री भी मिल जाएगी। एकेटीयू कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने प्रबंधन शास्त्र के पाठ्यक्रम में बदलाव को लेकर अपना सुझाव दिया। इसके तहत, नए सत्र से एमबीए के छात्र आध्यात्मिकता और वेदिक विजडम और मैनेजमेंट एंड डिजाइन थिंकिंग को भी पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ेंगे। इससे न केवल छात्रों को भारत के प्राचीन ज्ञान विज्ञान से परिचित होने का अवसर मिलेगा बल्कि उनमें अपने इतिहास को लेकर भी जागरूकता बढ़ेगी। साथ ही पाठ्यक्रम में हैप्पीनेस को भी शामिल किया जाएगा।इस पहल से छात्र भविष्य में कार्यस्थल पर खुशनुमा माहौल में काम करने के लिए तैयार हो सके। समिति की बैठक प्रोफेसर एम. सिंगला की अध्यक्षता में हुई। इस मौके पर प्रोफेसर मोनिका सिंघानिया, प्रोफेसर एमके झा प्रोफेसर, संगीता साहू सहित अन्य लोग शामिल हुए।

राजू श्रीवास्तव की पत्नी ने मेयर की दौड़ में लखनऊ सीट से मांगा बीजेपी से टिकट

लखनऊ मेयर सीट के लिए बीजेपी में कई दावेदार

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में नगर निकाय चुनाव का एलान होने के बाद सियासी सरगर्मी बढ़ गई हैं। दिवंगत अभिनेता और कमेडीयन राजू श्रीवास्तव की पत्नी शिखा श्रीवास्तव ने बीजेपी से लखनऊ महापौर प्रत्याशी के लिए आवेदन किया है। लखनऊ की मेयर सीट हॉट सीट मानी जाती है।1995 से इस सीट पर बीजेपी काबिज है।लखनऊ महापौर पद के लिए दिवंगत अभिनेता राजू श्रीवास्तव की पत्नी शिखा श्रीवास्तव ने आवेदन दिया है, जिसके बाद इस सीट को लेकर सरगर्मी और तेज हो गई है। बीजेपी में इस सीट के लिए उम्मदीवारों के बीच जबरदस्त मारामारी है।

बीजेपी से सबसे ज्यादा उम्मीदवार सामने आ रहे हैं, ऐसे में बीजेपी शिखा श्रीवास्तव को मौका देगी या नहीं ये बड़ा आसान सवाल नहीं है।लखनऊ महापौर सीट महिलाओं के लिए आरक्षित की गई है। इस सीट से बीजेपी में सबसे ज्यादा दावेदार सामने आए हैंम बड़े-बड़े नेताओं की नजर इस सीट पर है जिसके चलते नेता लखनऊ से दिल्ली तक के चक्कर काट रहे हैं। चाहे उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक का आवास हो या फिर उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का, हर जगह अलग-अलग जिलों से लोग टिकट के लिए आवेदन करने पहुंच रहे हैं। मौजूदा मेयर संयुक्ता भाटिया ने भी फिर से अपनी दावेदारी की है। उनका कहना है कि अगर दिनेश शर्मा को दो-दो बार मौका दिया जा सकता है तो उन्हें दूसरी बार टिकट क्यों नहीं? यूपी में नगर निकाय चुनाव दो चरणों में हो रहे हैं। लखनऊ में पहले चरण में 4 मई को वोट डाले जाएंगे। नामांकन मंगलवार से शुरू हो गए, जो 17 अप्रैल तक जारी रहेंगे। 18 अप्रैल को नामांकन पत्रों की जांच होगी और 20 अप्रैल तक नाम वापस लिए जा सकते हैं। बीजेपी पहले चरण के अपने उम्मीदवारों की घोषणा 15 अप्रैल तक कर सकती है। कल 13 अप्रैल को लखनऊ में मेयर के उम्मीदवारों के नाम पर चर्चा करने के लिए कोर कमेटी की बैठक हो सकती है।

राष्ट्रीय लोकदल से छिना राज्य स्तरीय पार्टी का दर्जा

अब चुनाव चिन्ह हैंडपंप पर मंडराया खतरा

संवाददाता

लखनऊ। चुनाव आयोग ने जयंत चौधरी की पार्टी राष्ट्रीय लोकदल का राज्य स्तरीय पार्टी का दर्जा समाप्त कर दिया है, इससे उसके पास सिंबल नहीं रह जाएगा। राष्ट्रीय लोकदल के मुखिया जयंत चौधरी ने चुनाव आयोग से गुहार लगाई है कि निकाय चुनाव में उनकी पार्टी के प्रत्याशियों को हैंडपंप चुनाव चिह्न ही आवंटित किया जाये। फैसला चुनव आयोग को करना है। कभी किसान राजनीति के अगुवा रहे पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की राजनीतिक विरासत आज कमजोर पड़ती दिख रही है। उनके दिवंगत बेटे चौधरी अजित सिंह और पौत्र जयंत चौधरी को 2019 में लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था। अब राष्ट्रीय लोकदल के पास एक रिजर्व सिंबल नल चुनाव चिह्न नहीं रह जाएगा, क्योकि किसी भी पार्टी को राज्य स्तरीय दल मिलने के लिए जरूरी होता है कि विधानसभा चुनाव में 3 प्रतिशत सीटें मिली हों या फिर न्यूनतम 3 सीट हासिल की हो। 2022 में रालोद ने सपा के साथ गठबंधन करते हुए 33 सीटों पर चुनाव लड़ा था, लेकिन उसे महज 8 सीटों पर ही जीत मिली थी। दुनिया में चुनाव चिन्ह का इतिहास काफी पुराना है। 1789 में अमेरिका में अलेक्जेंडर हैमिल्टन के नेतृत्व में पहली संगठित राजनीतिक पार्टी बनी थी, जिसका नाम फेडरलिस्ट पार्टी था। इस पार्टी का निशान एक वृत्ताकार छल्ले यानी साइकिल की रिंग के जैसा था। इस छल्ले का रंग काला था। यहीं से दुनियाभर के संगठित दलों के बीच चुनाव चिन्ह या पार्टी सिंबल की प्रक्रिया शुरू हुई थी।गैर मान्यता प्राप्त पार्टी चुनाव आयोग में रजिस्टर्ड तो होती हैं लेकिन इन्हें मान्यता नहीं होती है। क्योंकि इन पार्टियों ने इतने वोट हासिल नहीं किए होते हैं कि इन्हें क्षेत्रीय पार्टी का दर्जा दिया जा सके। भारत में ऐसी लगभग 2796 पार्टियां हैं। 1985 में स्व चौधरी चरण सिंह ने लोकदल का गठन किया था। इसी बीच 1987 में चौधरी अजित सिंह के राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते पार्टी में फिर विवाद हुआ और लोकदल अ का गठन किया गया। इसके बाद लोकदल अ का 1988 में जनता दल में विलय हो गया। जब जनता दल में आपसी टकराव हुआ तो 1987 लोकदल अ और लोकदल ब बन गया। फिर इस दल का 1988 में जनता पार्टी में विलय हो गया था। फिर जब जनता दल बना तो चौधरी अजित सिंह का दल उसके साथ हो गया। लोकदल अ यानि चौधरी अजित सिंह का 1993 में कांग्रेस में विलय हो गया था। चौधरी अजित सिंह ने एक बार फिर कांग्रेस से अलग होकर 1996 में चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की भाकियू की राजनैतिक विंग किसान कामगार पार्टी की कमान सम्भाली थी। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत से नाराजगी बढ़ने के बाद 1998 में इस दल का नाम चौधरी अजित सिंह ने बदलकर राष्ट्रीय लोकदल कर दिया था। इस दल ने कई बार अपना रूप और नाम बदला। कभी किसी से समझौता किया तो कभी किसी दल में विलय किया। चौधरी अजित सिंह अनेक बार सत्ता की चाबियां हाथ में लेकर चले तो कई बार हासिए पर भी पहुंच गए थे। प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव सरकार की सरकार बचाने के लिए आरोपों के कारण चौधरी अजित सिंह बुरे दिन भी देखने को मिले थे। सीबीआई के अनुसार 1993 में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव आया था और सरकार को बचाने के लिए प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के लगातार संपर्क में रहने वाले भजनलाल ने एक और मोर्चा खोल दिया था। उनके निशाने पर जनता दल अ के नेता चौधरी अजित सिंह और उनके सांसद थे। 24 जुलाई 1993 को वह ग्रुप के नेता चौधरी अजीत सिंह के घर गए थे, उन्हें बताया गया कि उन्हें प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने मदद देने के लिए भेजा। इसके बाद राम लखन सिंह यादव ने भी अपना एक अलग समहू बना लिया था और मतदान के दिन इस समूह के सात सांसदों ने अविश्वास प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया था। इसके बाद सीबीआई द्वारा चार्जशीट दाखिल होने पर विद्वान विशेष न्यायाधीश ने सूरज मंडल, शिबू सोरेन, साइमन मरांडी, अजीत सिंह, राम लखन सिंह यादव, राम सरन यादव, रोशन लाल, आनंदी चरण दास, अभय प्रताप सिंह और हाजी मोहम्मद के खिलाफभी आरोप तय करने का आदेश दिया था। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने यह कहते हुए इनको रिश्वत के आरोप से बरी कर दिया था कि संविधान के अनुच्छेद-105 के तहत सांसदों को विशेष छूट प्राप्त है। संसद में दिए गए भाषण या वोट पर किसी भी सांसद के खिलाफ किसी भी अदालत में कोई कार्यवाही नहीं हो सकती।2014 का लोकसभा चुनाव चौधरी अजित सिंह ने कांग्रेस के साथ लड़ा था।

प्रमोशन तो मिलेगा लेकिन वेतन नहीं बढ़ेगा

बिजली विभाग के उत्पादन निगम के जूनियर इंजीनियरों को लगा झटका

संवाददाता

लखनऊ। बिजली विभाग के इंजीनियरों को एक और झटका लगा है। अब 19 साल की नौकरी के बाद प्रमोशन तो मिलेगा लेकिन बढ़ा हुआ वेतनमान नहीं मिल पाएगा। ऐसे में एक इंजीनियर को रिटायरमेंट के समय हर महीने का करीब 50 से 70 हजार रुपए तक का नुकसान होगा। अभी तक के नियमों के अनुसार उसको 8700 का ग्रेड पे मिलता है। लेकिन अब प्रमोशन मिलेगा लेकिन ग्रेड पे पिछला वाला ही रहेगा। ऐसे में कर्मचारियों को 19 साल की नौकरी के बाद औसतन हर महीने कम से कम 50 हजार रुपए का नुकसान होने वाला है। जो आदेश जारी किया गया है उसमें कहा गया है कि 9 साल की नौकरी पूरी होने से पहले प्रमोशन मिल जाता था। उन्हें 19 साल की सेवा पूरी होने पर 8700 का वेतनमान मिलता था। मगर अब ऐसा नहीं हो सकेगा। इसका विरोध भी शुरू हो गया है। उप्र जूनियर इंजीनियर संगठन के अध्यक्ष जयप्रकाश का कहना है कि यह फैसला गलत है। इससे कम से कम एक-एक इंजीनियर को 50,000 रुपए का नुकसान होगा। अभी तक की व्यवस्था में सरकारी कर्मचारी को तीन प्रमोशन वेतनमान मिलता है। जूनियर इंजीनियर की भर्ती के समय कर्मचारी को 4600 रुपए वेतनमान मिलता है। उसके बाद 9 साल की नौकरी पूरी होने के बाद 4800 का वेतनमान और 14 साल पर 5400 रुपए का वेतनमान मिलता था। 19 साल की सेवा पूरी होने की स्थिति में 6600 का वेतनमान मिलता है। ऐसे में जूनियर इंजीनियर 9 साल की सेवा से पहले ही एई पद पर प्रमोट होता है तो उसको 5400 रुपए का वेतनमान मिलता है। ऐसे में 14 साल की सेवा पूरी होने पर उसे 6600 वेतनमान और 19 साल की सेवा पूरी होने पर 8700 वेतनमान मिलता है। लेकिन अब यह व्यवस्था नहीं रहेगी।उत्पादन निगम के इस फैसले के खिलाफसभी संगठन एक हो गए हैं। संघर्ष समिति के संयोजक शैलेन्द्र दुबे ने कहा कि इस मुद्दे को लेकर तीन दिसंबर को ऊर्जा मंत्री के साथ समझौता हुआ था। ये आदेश समझौते का खुले तौर पर उल्लंघन है। जूनियर इंजीनियर संगठन के अध्यक्ष जयप्रकाश ने भी इस फैसले का विरोध करते हुए चेयरमैन को पत्र लिखा है। बताया जा रहा है कि हड़ताल के बाद इंजीनियरों और चेयरमैन के बीच लड़ाई बढ़ गई है। ऐसे में इंजीनियरों को झटका देने के लिए यह फैसला लिया गया है।

माह में चार बार मनेगा प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान

❑ गड्भर्भवतीयों की हर माह 1 व 9 और 16 व 24 को होगी जांच, उपरोक्त तारीखों को पीएमएसएमए दिवस का होगा आयोजन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य हमेशा से ही चिंता का विषय बना हुआ है, स्वास्थ्य विभाग द्वारा अनेकों कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं जिससे कि मातृ मृत्यु दर को कम करके गर्भवती एवं नवजात को स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन प्रदान किया जा सकेप् इसी दिशा में मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए एक और पहल की गई है। अब हर माह की 1 और 16 तारीख को भी प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (पीएमएसएमए) दिवस मनाया जाएगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0गीता राम ने बताया की इसके तहत स्वास्थ्य महकमा उच्च जोखिम गर्भावस्था वाली महिलाओं को चिन्हित करेगा। इन महिलाओं को जांच और इलाज में प्राथमिकता देने के साथ ही उनके लिए उपचार के विशेष प्रबंध भी किए जाएंगे। इसके पूर्व पीएमएसएमए दिवस प्रत्येक माह की नौ और 24 तारीख को मनाया जा रहा था। अब इसे विस्तारित किया गया है। अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी (आरसीएच) डॉ0बीएल संजय ने बताया कि विभिन्न कारणों से जोखिम गर्भावस्था मातृ-शिशु की मृत्यु का कारण बनती हैं। प्रसव पूर्व छोटी-बड़ी कई कमियों का सामने नहीं आ पाना इसकी प्रमुख वजह है। गर्भवती को उच्च रक्तचाप, गंभीर रक्ताल्पता,मधुमेह, दिल की बीमारी,क्षयरोग, मलेरिया आदि की स्थिति में जोखिम बना रहता है। स्वास्थ्य विभाग का उद्देश्य ऐसी महिलाओं को प्रसव पूर्व ही चिन्हित कर उपचार करना होगा जिससे कि प्रसव के दौरान खतरनाक स्थिति न बने। प्रसव पूर्व जांच में ऐसी महिलाओं को चिन्हित कर सरकारी अस्पतालों में उनका उपचार किया जाएगा। जिला मातृ स्वास्थ्य परामर्शदाता सीपी सिंह ने बताया

की अब तक प्रत्येक माह की 9 तारीख को पीएमएसएमए मनाया जा रहा था। अब इसमें और तेजी लाने के लिए प्रमुख सचिव ने इसे विस्तारित करते हुए हर माह 1 और 16 तारीख को भी जनपद की एफ्आरयू (प्रथम संर्दभन इकाई), समस्त मेडिकल कॉलेज, जनपदीय महिलाध्संयुक्त चिकित्सालयों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, अन्य सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों तथा शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में यह अभियान चलाया जाएगा। इसमें द्वितीय व तृतीय त्रैमासकी गर्भवती की जांच होगी। इसके साथ ही बताया की हर माह की 9 तारीख को जनपद के जिला महिला अस्पताल सहित ब्लॉक स्तरीय स्वास्थ्य इकाईयों, प्राथमिक स्वास्थ्य के ंद्रों और शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में और हर माह की 24 तारीख को जनपद की एफ्आरयू (प्रथक संर्दभन इकाई) में यह आयोजन किया जा रहा था। उन्होंने कहा कि अब हर महीने की 1,9, 16,24 तारीख को गर्भवती महिला स्वास्थ्य केंद्र पर आकर जांच अवश्य करवाएं।

पीडी ने जिला विकास अधिकारी को सौंपी पीएम आवास योजना की जांच रिपोर्ट

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। पीएम आवास योजना में की गई हेराफेरी के मामले में पूर्व व वर्तमान दोनों ग्राम विकास अधिकारियों को दोषी व वास्तविक लाभार्थियों को पात्र पाए जाने के बाद पीडी ने जिला विकास अधिकारी को जांच रिपोर्ट सौंपी है। रविवार 4 अप्रैल को क्षेत्र के मोन निवासी रेखा पत्नी सूरज और नीलम पत्नी धर्मराज को आवंटित आवासों में हेराफेरी के मामले में परियोजना निदेशक राजेश कुमार स्थलीय सत्यापन हेतु गांव पहुंचे थे। रेखा पत्नी सूरज के आवास की धनराशि रेखा पत्नी शिवराज और नीलम पत्नी धर्मपाल के आवास की धनराशि नीलम पत्नी चंद्रभान सिंह के खाते में भेजी गई थी। दोनों आवासों में अनियमितता के आधार पर परियोजना निदेशक राजेश कुमार ने रेखा पत्नी सूरज के आवास को रेखा पत्नी शिवराज को दिए जाने के मामले में पूर्व ग्राम विकास अधिकारी अरुण कुमार व नीलम पत्नी धर्मपाल के आवास को नीलम पत्नी चंद्रभान को दिए जाने के मामले में वर्तमान ग्राम विकास अधिकारी मनोज कुमार को दोषी एवं दोनों वास्तविक लाभार्थियों को आवास हेतु पात्र पाए जाने के साथ रेखा पत्नी शिवराज व नीलम पत्नी चंद्रभान के खाते में भेजी गई धनराशि को वसूलने के निर्देश खण्ड विकास अधिकारी महराजगंज को देते हुए जांच आख्या जिला विकास अधिकारी को सौंप दी है। मामले में शिकायतकर्ता अधिवक्ता शैलेंद्र सिंह ने बताया कि जिला स्तरीय जांच के बाद हेराफेरी करने वाले ग्राम विकास अधिकारियों पर कार्रवाई व पात्र लाभार्थियों को न्याय मिलना सुनिश्चित हो गया है।

मामूली विवाद में चला मूका थप्पड़, वृद्ध महिला की हुई मौत

संवाददाता, बहराइच। थाना क्षेत्र विशेश्वरगंज अंतर्गत ग्राम कहारन पुरवा, प्रतापपुर उपरहर निवासिनी 70 वर्षीय वेवा कुंती देवी की मारपीट में मृत्यु हो गई ।प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरुवार शाम करीब पांच बजे मृतका वेवा के पुत्र ननकुंने की गाय दद्दू दूबे निवासी ग्राम गंगा जमुनी के खेत मे चली गई थी । पकी फसल में गाय द्वारा किये गए नुकसान से नाराज होकर दोनों पक्ष में कहा सुनी हुई । बात बढ़ती देख दोनो पक्ष के परिजन इकट्ठा हो गए ।जमकर मूका थप्पड़ चले ,जिससे वृद्ध वेवा गिरकर बेहोश हो गई । घटना स्थल पर ही कुछ देर बाद महिला की मौत हो गई । सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पी एम हेतु जिला अस्पताल बहराइच भेज दिया है । घटना स्थल का जायजा सी ओ आनंद राय ने भी किया है । थाना इंचार्ज प्रभारी विकास वर्मा ने बताया कि मृतका के पुत्र ननकुंने ने दद्दू दूबे ,ज्ञान चंद्र व बब्बू दूबे निवासी गंगा जमुनी के विरुद्ध तहरीर दिया है । तहरीर व पी एम रिपोर्ट के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर आवश्यक कार्यवाही की जाएगी ।

क्रय विक्रय सहकारी समिति के अरुण यादव निर्विरोध हुए निर्वाचित गजेन्द्र प्रताप सिंह उपाध्यक्ष हुए निर्वाचित

संवाददाता, भरथना,इटावा। भरथना सहकारी क्रय-विक्रय समिति के सम्पन्न हुए निर्वाचन में सपा के पूर्व जिपंस सुरेन्द्र यादव बाबूजी के भतीजे अरूण यादव संजू को अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित किया गया। वहीं उपाध्यक्ष पद पर गजेन्द्र प्रताप सिंह निर्वाचित हुए। दोनों पदाधिकारियों के चुने जाने पर निर्वाचन अधिकारी ने उन्हें प्रमाण पत्र भेंट किया। उक्त दोनों पदाधिकारियों के चुने जाने की सूचना पर कस्बा के मुहल्ला बालूगंज स्थित समिति कार्यालय परिसर पर पहुँचे पूर्व ब्लाक प्रमुख हरिओम यादव,विधायकध्ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि ध्रुव कुमार चीनी यादव, पूर्व जिपंस रामवीर यादव, अरविन्द यादव,आशू यादव,भोला सिंह यादव, नकुल यादव,बण्टी यादव, दीपू कुशवाह आदि ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर स्वागत सम्मान किया है।

अमित मिश्रा की अगुवाई में निकाली गई स्कूल चलो अभियान के तहत रैली

संवाददाता, बहराइच। उच्च प्राथमिक विद्यालय रानियांपुर में स्कूल चलो अभियान रैली का शुभारंभ खंड शिक्षा अधिकारी विशेश्वरगंज मनमोहन सिंह द्वारा किया गया ,इस अवसर पर ग्राम प्रधान विनय देवी एसएमसी के अध्यक्ष मनोहर लाल एवं गांव के गणमान्य नागरिकों द्वारा स्कूल चलो अभियान रैली में सहभागिता किया गया। बच्चों को गांव के बीच से होते हुए रनियापुर से ककरहवा तक रैली का मार्च कराया गया ।इस अवसर पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अजय कुमार,मुकेश तिवारी, गांव के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे सभी को अपने बच्चों को विद्यालय में नामांकन के लिए प्रेरित किया गया । इस अवसर पर विद्यालय परिवार के शिक्षक श्रीमती विमला मिश्रा , अनुराधा, विशाखा ,मोनी सिंह, विजय शंकर तिवारी, आभा तिवारी ,अरुण कुमार, रीना एवं एवं विद्यालय परिवार की सभी रसोईया उपस्थित रही ।

उपनिरीक्षक की तहरीर पर अज्ञात लोगों के विरुद्ध मुकदमा

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। बीते 31को नहर किनारे खेत में संदिग्ध परिस्थितियों में मिले अज्ञात शव के मामले में उपनिरीक्षक की तहरीर पर अज्ञात लोगों के विरुद्ध स्थानीय कोतवाली में मुकदमा पंजीकृत किया गया है। ज्ञात हो की क्षेत्र के महापतगंज गांव में बीते 31को सलेथू रजबहा नहर के किनारे जंग बहादुर सिंह के खेत में 35 वर्षीय अज्ञात युवक का चार से पांच दिन पुराना शव बरामद हुआ था ।मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था।वही घटना के एक माह बाद गुरुवार को उपनिरीक्षक आशीष मालिक की तहरीर पर अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही की जा रही है।मामले में कोतवाल श्याम कुमार पाल ने अज्ञात लोगों के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत किया गया है। शव की शिनाख्त के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है।

निर्माण का विरोध करने पर दबंगों ने ईट व पत्थरों से किया हमला, मामला दर्ज

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। सहन की जमीन पर निर्माण करने का विरोध करने पर दबंगों ने ईट पत्थर फेंककर मारना शुरू कर दिया व गालीगलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी, पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने चार लोगों के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया है। मामला कोतवाली क्षेत्र के सवैया हसन गाँव का है, गाँव निवासी रामशरन का कहना है कि बुधवार की दोपहर पड़ोस के कुछ लोग उसके सहन की भूमि पर निर्माण कर रहे थे ,जब उसने इस बात का विरोध किया तो वो लोग ईट पत्थर फेंककर मारने लगे और गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने देर शाम कोतवाली पहुंचकर सिराज खान, ताजदार, सरफ्राज व मेहजबीन बानो के विरुद्ध केस दर्ज कराया है। इस बाबत कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि चार लोगों के विरुद्ध केस दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन का हुआ स्वागत समारोह

संवाददाता, सुलतानपुर। राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के प्रदेश संगठन महामंत्री आलोक आर्य और प्रदेश मंत्री आनन्द जायसवाल को बनाये जाने पर भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। स्वागत समारोह का आयोजन नगर के एक निजी आवास पर गुरुवार को किया गया। इस मौके पर व्यापारियों एवं संगठन के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए आलोक कुमार आर्य ने कहा कि इस समय देश के 8 प्रांतों में संगठन पूरी तरह से सक्रिय है। संगठन का प्रत्येक सदस्य व्यापारियों एवं समाज की सेवा के लिए हमेशा सक्रिय रहता है। प्रदेश मंत्री आनन्द जायसवाल ने कहा कि व्यापारियों के हित मे हम हमेशा आपके साथ है। इस मौके पर प्रमुख रूप से कमल सेठ,विनोद लोहिया,अनिल बरनवाल,आशीष श्रीवास्तव,संजय कसौधन, राहुल सेठ, संदीप अग्रहरी, मुन्ना सोनी, अशोक वर्मा, विनय सेन, अनुज सोनी, मक्खनलाल मोदनवाल, संतोष अग्रहरी, दुर्गाप्रसाद मोदनवाल, यश अग्रहरी, शिवम् अग्रहरी, सूरज मोदनवाल, अशोक गुप्ता, दयाशंकर साहू,उत्कर्ष मोदनवाल आदि रहे।

एनटीपीसी परियोजना के अंदर दबंगों ने कम्पनी के साइड इंचार्ज को पीटा, मुकदमा दर्ज

संवाददाता, ऊंचाहार, रायबरेली। एनटीपीसी परियोजना के आवासीय परिसर में दबंगों ने कम्पनी के साइड इंचार्ज की उसके आवास पर जाकर जमकर पिटाई कर दी, पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने चार लोगों के विरुद्ध मारपीट का मामला दर्ज किया है। एनटीपीसी परियोजना के अंतर्गत कार्यरत ग्रीन एनर्जी कॉन्ट्रेक्शन कम्पनी के साइड इंचार्ज देवब्रत गिरी का कहना है कि बुधवार की रात आवासीय परिसर में वो अपने आवास पर मौजूद था, तभी चार लोग आये और गालीगलौज करते हुए अपने लोगों को नौकरी दिलाने की बात कही और उसके बाद मारपीट कर मुझे घायल कर दिया, पीड़ित गुरुवार को कोतवाली पहुंचकर अभिजीत सिंह, विपिन सिंह,शिवबरन व विनय सिंह के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि मारपीट के मामले में चार लोगों के विरुद्ध केस दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

सम्मानजनक मातृत्व देखभाल पर कार्यशाला आयोजित

संवाददाता, बहराइच। ममता हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर चाइल्ड संस्था के जिला समन्वयक डॉ यासिर हुसैन ने बताया कि संस्था के प्रोजेक्ट जागृति के अंतर्गत समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चित्तौरा में एएनएम के लिए सम्मानजनक मातृत्व देखभाल पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ कुंवर रितेश ने सभी एएनएम को विषम परिस्थितियों में भी अच्छा व्यवहार करने का निर्देश दिया जिससे सरकार द्वारा महिलाओं के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए चलाए जा रहे अभियान को और बल बल मिल सके और संस्थागत प्रसव को बढ़ावा मिल सके। कार्यक्रम का संचालन कर रहे ममता संस्था के जिला समन्वयक डॉ यासिर हुसैन ने प्रभारी चिकित्साधिकारी द्वारा प्रोजेक्ट जागृति के इस कार्यशाला की प्रशंसा और प्रयोगशाला में विचार रखने के लिए धन्यवाद प्रेषित किया गया। इस इस अवसर पर बीसीपीएम जे पी प्रजापति, एच ई ओ मुस्तकीम, अवधेश चौधरी आदि मौजूद रहे।

जो समय पर अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते हैं वे बर्बाद हो जाते है : एसएन चक

अम्बेडकर जयन्ती पर बाबा साहब को किया नमन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

भरथना, इटावा। उत्तर-प्रदेश के डीजीपी रहे अम्बेडकर विचारक एसएन चक ने कहा है कि जो समय पर अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते हैं वे बर्बाद हो जाते हैं। दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों के साथ यही हुआ, जो कुशल नेतृत्व दे सकने लायक हो गए थे उनकी लापरवाही, मक्कारी, स्वार्थपरता, बुजदिली के चलते देश के बहुजन फिर बर्बादी की कगार पर खड़े हो गए हैं। हजारों वर्षों इनका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक शोषण वर्ण व्यवस्था के कारण हुआ, अज्ञानता, धर्मभीरुता के कारण हुआ, दुश्मन और दोस्त की सही पहचान ना कर पाने के कारण हुआ था। बड़ी मुश्किल से इनके बीच अम्बेडकर हुए जो बुद्ध, कबीर, नानक, रैदास, ज्योतिबा, शाहू जी के अधूरे सपनों को अपने दम पर अपनी बेमिसाल काबिलियत और संघर्षों के दम पर हकीकत में बदल सके। इस एक महापुरुष ने वो सब दे दिया इन युगों युगों के पीड़ित, उपेक्षित, बहिष्कृत, तिरस्कृत अछूतों, पिछड़ों, आदिवासियों को जो इन्हें शून्य से शिखर पर पहुंचा सकता था। उन्होंने स्वयं अथक परिश्रम करके अथाह ज्ञान प्राप्त किया और खुद धर्म और पाखण्ड के अंतर को पूरी तरह से समझ लिया, उनका ज्ञान बहुजनों तक पीढी दर पीढ़ी पहुंचता रहे इसलिए उसे पुस्तकों में लेखबद्ध कर दिया। खुद अधिकारों के लिए संघर्ष में नेतृत्व दिया जैसे महाड़ का सत्याग्रह, संघर्ष की मानसिकता जगाने के लिए कालाराम मन्दिर प्रवेश आंदोलन चलाया, मनुस्मृति जलाई, गोलमेज सम्मेलनों में दलितों का पक्ष रखा, अछूतों के हित के लिए बेमन से पूना पैक्ट कर लिया, अवसर मिला तो अद्भुत संविधान की रचना कर डाली और सामाजिक दृष्टि से वंचितों,शोषितों को ऐसे वैधानिक अधिकार दे गए जिनके आधार पर सत्ता में दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को भागीदारी का अवसर मिल सका। रिटायर्ड डीजीपी श्री चक ने बताया कि बाबा साहब को गए हुए 1956 से अब तक 67 वर्ष बीत गए। क्या दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों ने बाबा साहब का कारवां आगे बढ़ाया? नहीं। आज देश मे सैकड़ों दलित आई ए एस,

आई पी एस हैं, सैकड़ों रिटायर्ड आई ए एस, आई पी एस हैं, हजारों डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, इंस्पेक्टर, बाबू हैं, हजारों प्रधान से ले कर विधायक, सांसद तक है, लाखों दलित, पिछड़े, आदिवासी खूब सम्पन्न हैं लेकिन अधिकांश दलित, पिछड़े, आदिवासी तो बुरे हाल में हैं। इनकी सोचने की आदत वैसी ही है जैसी इनके पुरखों की थी, दोस्त को दुश्मन और दुश्मन को दोस्त समझते हैं। आज देश के हालात ऐसे हैं कि देश का संविधान ही खतरे में दिखाई दे रहा है। 2024 के चुनाव के बाद क्या स्थिति होगी पता नहीं। 85 प्रतिशत वोट के जो स्वामी हैं वे पिछड़े,दलित, आदिवासी भयंकर रूप से धर्मान्ध हैं नतीजा यह है कि मन्दिर के नाम पर ये उन ताकतों को वोट दे देते हैं जो इन्हें फिर से वैसा ही गुलाम बनाना चाहती हैं जैसे कि बहुजनों के पुरखे 185 ईसा पूर्व से लेकर ईस्ट इंडिया कम्पनी के आने तक रहे। दलित, पिछगड़े, आदिवासी एक दूसरे के साथ रोटी बेटे का सम्बंध तो छोड़िए सत्ता के लिए साझीदार हो कर वोट तक देने में एक नही हो सकते। ये आज भी एक हो जाएं तो राजनैतिक कायाकल्प हो जाये, जमानतें जब्त हो जाएंगी उनकी जो आज सात्तासीन हैं और ख्वाब देख रहे हैं संविधान को पलीता लगाने का। उन्होंने कहा है कि जब जागो तब सबेरा, अभी इतना वक्त है कि वक्त बदल सकता है। हम जीत सकते हैं वे हार सकते हैं। संविधान बच सकता है, बाबासाहब का सपना पूरा हो सकता है। जरूरत इस बात की है कि जो भी पढ़े लिखे हैं, राजकीय या निजी सेवाओं में हैं, व्यवसायी हैं, मध्यवर्ग के हैं या निम्नमध्यवर्ग के दलित, पिछडे आदिवासी हैं वे अपनी जिम्मेदारी समझें और अपनी संतानों के अधिकारों की रक्षा के लिए बाहर निकलना शुरू करें, गांव,कस्बों में जा जा कर छोटी छोटी मीटिंगों में डॉ0 अम्बेडकर के संघर्ष की कहानी सुनाएं,उनके द्वारा किये गए कार्यों को बताएं, उनके संविधान ने क्या दिया ये बताएं और उन्हें आगाह करें कल के खतरे के बारे में,कोई श्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता है,यह भी व्यर्थ नहीं जाएगा। हो सकता है कि आप के साथ भारी भीड़ ना खड़ी हो सके संघर्ष करने वालों की तो भी कोई बात नहीं क्योंकि दुनिया मे ऐसा ही होता है,सफल होने पर सब साथ खड़े होंगे, जय जयकार करेंगे।

बीईओ संवर्ग की प्रमोशन नियमावली भूला विभाग, संघ करेगा धरना

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

रायबरेली। बेसिक शिक्षा विभाग में शिक्षकों और उच्चाधिकारियों के बीच में समन्वय की मजबूत कड़ी माने वाले खण्ड शिक्षा अधिकारी इस समय शासन से नाराज चल रहे हैं। उनकी नाराजगी की वजह है सिर्फ फोन के आधार पर होने वाली कार्रवाई और काम करने के बाद भी 119 बीईओ को प्रतिकूल प्रविष्टि दिया जाना है। गुरुवार को उत्तर प्रदेश विद्यालय निरीक्षक संघ (बीईओ संघ) की प्रदेश पदाधिकारियों के नेतृत्व में हुई एक होटल में हुई बैठक में नाराजगी व्यक्त की गई। पदाधिकारियों ने कहा कि हमारे संवर्ग के लोग एक ही पद से सेवानिवृत्त होते जा रहे हैं, लेकिन विभाग की तरफसे प्रमोशन नहीं किया जा रहा है। इसके अलावा वेतन विसंगति, एसपीपीसहित अन्य मांगों को पूरा नहीं किया जा रहा है। बीईओ संघ के प्रदेश अध्यक्ष प्रमेन्द्र शुक्ला ने

कहा कि विभाग के उच्चाधिकारियों की तरफ से महज फोन के आधार पर लिए गए फीडबैक के आधार खण्ड शिक्षाधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी की जा रही है। हमारी तरफ से निष्पक्ष जांच किए जाने को लेकर बेसिक शिक्षा महानिदेशक और प्रमुख सचिव से लेकर अन्य अधिकारियों को ज्ञापन भी दिया जा चुका है। उन्होंने कहा कि बीईओ की अगर निष्पक्ष जांच नहीं की जाएगी तो प्रदेश संगठन की तरफसे 17 अप्रैल को लखनऊ में धरना प्रदर्शन किया जा गए है। इसके अलावा हमारी प्रोन्नत, वेतन विसंगति, प्राइवेट मोबाइल से कार्य सहित अन्य मांगें है, जिनको विभाग वर्षों से पूरा नहीं कर रहा है।प्रदेश महामंत्री वीरेंद्र कनौजिया ने कहा कि विभाग की तरफसे 360 डिग्री के आधार पर फीडबैक लिया गया है। किसी भी अधिकारी के प्रति जांच का आधार सिर्फफोन नहीं हो सकता है। यह कार्रवाई तभी एकदम पारदर्शी हो सकती है जब बीईओ से भी फीडबैक लिया जाए। उन्होंने कहा कि विभाग की तरफसे न तो कोई ठोस आधार लिया गया और न ही सेवा नियमावली का ध्यान रखा गया। आखिर शिक्षकों से फीडबैक लेने से पूर्व यह तय नहीं किया गया कि किन शिक्षकों से फीड बैक लिया जाए। इस मौके पर प्रदेश उपाध्यक्ष संजय शुक्ला, संयुक्त मंत्री आरपी यादव, बीईओ बृजलाल वर्मा, वरुण मिश्रा, रामचन्द्र यादव, सत्य प्रकाश, अरविंद सिंह, एसपी यादव, कुलदीप, धर्मेश यादव, के के त्रिपाठी, गौरव मिश्रा, प्रियंका सिंह मौजूद रहीं।

कार ने बाइक सवार को मारी जोरदार टक्कर

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के लखनऊ प्रयागराज मार्ग पर पूरे बाबा गाँव के पास विटारा ब्रेजा कार ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दी, घटना में बाइक युवक गम्भीर रूप से घायल हो गया, राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे सरकारी वाहन से सीएचसी पहुंचाया, जहाँ चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया, पुलिस द्वारा शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और पुलिस ने चालक समेत कार को भी कब्जे में लिया है। जगतपुर थाना क्षेत्र के साई टिकरिया निवासी अनूप कुमार द्विवेदी 45 वर्ष किसी कम्पनी के बल्ब की सप्लाई का कार्य करता था, गुरूवार की सुबह व्यवसाय के सिलसिले में वो बाइक से ऊंचाहार की तरफ आया था और दोपहर बाद घर वापस लौट रहा था, तभी पूरे बाबा गांव के

पास लखनऊ की तरफसे प्रयागराज जा रही तेज रफ्तार कार ने उसे सामने से टक्कर मार दी, घटना में वो गम्भीर रूप से घायल हो गया, सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे सीएचसी पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया, पुलिस द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा गया है। इस बाबत सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज कुमार शुक्ल ने बताया कि युवक को मृत अवस्था में सीएचसी लाया गया था। जबकि इस बाबत कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, चालक समेत कार को भी कब्जे में लिया गया है, तहरीर मिलने पर कार्यवाही की जायेगी।

आर्य कन्या महाविद्यालय में बच्चों के अधिकार व बच्चों के लैंगिक उत्पीड़न पर हुआ विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार एवं माननीय जनपद न्यायाधीश ध् अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, राज कुमार सिंह के आदेशानुसार ,जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हरदोई के तत्वाधान में तहसील सदर के अंतर्गत आर्य कन्या महाविद्यालय में बच्चों के अधिकार व बच्चो के लैंगिक उत्पीड़न अधिनियम 2012 विषय पर विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदोई के अपर जिला जज ध् सचिव सुधाकर दूबे ने अपने उद्बोधन में छात्राओं को भारतीय संविधान की प्रक्रति, कानून की अवधारणा, अपराध की प्रकृति, अपराधियों की मनोवृत्ति, विशेषकर बच्चों के सन्दर्भ में एवं बच्चों के विधिक अधिकारों विशेषत: पॉक्सो एक्ट 2012 के प्रावधानों की विस्तृत जानकारी प्रदान की ।बाल उत्पीड़न को रोकने पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि यौन अपराध व्यक्ति के मस्तिष्क से प्रारम्भ होता है, यौन उत्पीड़न की शंका होने पर लड़कियों को आवाज उठाने की जरूरत है उन्होंने भरण पोषण व घरेलू हिंसा अधिनियम विषय पर भी चर्चा की। विशिस्ट अतिथि के रूप में नायब तहसीलदार अनेक सिंह द्वारा भारतीय संविधान वर्णित मौलिक अधिकार व मौलिक कर्तव्यों के बारे में एवं सम्बंधित विषय पर जानकारी देने के साथ साथ महिलाओं के लिए जनकल्याणकारी योजनाओं व महिला हेल्प लाइन नम्बर 181,तथा वीमेन पावर लाइन नंबर 1090 पर चर्चा की। प्राचार्या डॉ. सुमन वर्मा द्वारा मुख्य अतिथि का बुके देकर स्वागत किया गया ।प्राचार्या द्वारा मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए छात्राओं को बहिर्मुखी व्यक्तित्व को अपनाने की सलाह देते हुए निरन्तर संवाद कायम करने का आव्हान किया ।कार्यक्रम की संचालिका सुश्री प्रियंका आर्य द्वारा कार्यक्रम की विषय वस्तु पर प्रकाश

डाला गया। इस अवसर पर डॉ. सरिता यादव, डॉ. अंजू, डॉ. श्वेता यादव,डॉ. स्मृति सिंह, डॉ. जायरा जैदी, श्रीमती सन्त कुमारी, लिपिक अभिषेक अवस्थी, लीगल एड क्लीनिक दिनेश कुमार पी एल वी कौशल किशोर दीक्षित तथा महाविद्यालय की अधिक संख्या में छात्राएं मौजूद रहीं।

जोखिम वाली गर्भवती को चिन्हित करने पर जोर

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस इस माह 17 अप्रैल को मनाया जाएगा पीएमएसएमए दिवस

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई । जनपद में माह की नौ एवं 24 तारीख को मनाया जाने वाला प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (पीएमएसएमए) दिवस अब हर माह की एक और 16 तारीख को भी मनाया जाएगा। इस तरह अब हर महीने चार दिन यह दिवस् मनाया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक गर्भवती को जाँच की सुविधा मुहैया करायी जा सके। यह जानकारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. राजेश कुमार तिवारी ने दी। उन्होंने बताया कि इस संबंध में जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिए जा चुके हैं द्य इस माह 16 अप्रैल को रविवार होने के कारण पीएमएसएमए दिवस अगले दिन 17 अप्रैल यानि सोमवार को मनाया जाएगा। सभी स्वास्थ्य अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि चिकित्सा प्रभारी जोखिम गर्भ वाली

चिन्हित महिलाओं को पीएमएसएमए दिवस पर भेजने के लिए आशा और एएन्एम को प्रेरित करें। आशा कार्यकर्ता जोखिम गर्भ वाली चिन्हित महिलाओं को अनिवार्य रूप से स्वास्थ्य केंद्र पर लेकर आयें। स्वास्थ्य इकाई पर गर्भवती के लिए सूक्ष्म जलपान की व्यवस्था की जाए। ब्लॉक के तहत निजी महिला विशेषज्ञ चिकित्सकों को अपेक्षित सहयोग के लिए स्वास्थ्य केंद्र पर आमंत्रित करें। सभी इकाई प्रभारियों को ब्लॉक स्तरीय इकाई पर तैनात महिला विशेषज्ञ या महिला एमबीबीएस चिकित्सक को अनिवार्य रूप से इस दिवस पर उपस्थित रहकर गर्भवती की जांच करने के लिए मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने निर्देश दिए हैं। इसके साथ ब्लॉक स्तरीय इकाई पर महिला चिकित्सक की तैनाती न होने की दशा में ब्लॉक के तहत अन्य प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर तैनात महिला एमबीबीएस चिकित्सक की ड्यूटी लगाए जाने और उपस्थिति सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिये हैं । मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि इस दिवस की शुरुआत 19 मई 2016 को हुई थी । इसके तहत हर माह की नौ तारीख को मेडिकल कॉलेज, सभी महिला एवं संयुक्त चिकित्सालयों, ब्लॉक स्तरीय स्वास्थ्य इकाइयों, शहरी सीएचसी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रो (पीएचसी) में यह दिवस मनाया जाता ह। पीएमएसएमए के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गर्भवती को प्रसव पूर्व कम से कम एक बार एमबीबीएस चिकित्सक की देख रेख में नि:शुल्क जांच एवं उपचार उपलब्ध कराना है ताकि उच्च जोखिम की गर्भावस्था (एचआरपी) की पहचान कर उसे समय से इलाज उपलब्ध कराया जा सके। इस दौरान गर्भवती की हीमोग्लोबिन , पेशा, सिफ्लिस वएचआईवी की जाँच और अल्ट्रा साउंड की सुविधा मिलती हैं। वर्ष 2022 में हर माह की 24 तारीख को भी मेडिकल कॉलेजों, एफ्आरयू - सीएचसी और अन्य सीएचसी तथा शहरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर पीएमएसएमए दिवस का आयोजन किया जाने लगा। इसी का विस्तार करते हुए अब हर माह की एक और 16 तारीख को मेडिकल कॉलेजों, एफ आरयू दृसामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रो (सीएचसी) और अन्य सीएचसी तथा शहरी सीएचसी पर पीएमएसएमए दिवस का आयोजन किया जाएगा।

राष्ट्रीय लोक अदालत के वृहद प्रचार प्रसार हेतु बैठक

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। पद्म नारायण मिश्र,जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अम्बेडकरनगर के निर्देशानुसार जनपद न्यायालय, अम्बेडकरनगर में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत की सफ्लता हेतु मीटिंग हाल, जनपद न्यायालय, अम्बेडकरनगर में विशेष न्यायाधीश एस0सी0एस0टी0 एक्ट/नोडल अधिकारी,राष्ट्रीय लोक अदालत की अध्यक्षता में एवं कमलेश कुमार मौर्य, अपर जिला जज ध्सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अम्बेडकरनगर की उपस्थिति में आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक संख्या में प्री-लिटिगेशन बाद नियत कर निस्तारित करवाने हेतु जनपद अम्बेडकरनगर के विभिन्न विभागों के राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु नामित नोडल अधिकारियों के साथबैठक का आयोजन किया गया।विशेष न्यायाधीश, एस0सी0ध् एस0टी0 एक्ट नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय लोक अदालत द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत को सफ्ल बनाने के लिए अधिक से अधिक प्री-लिटिगेशन वादो प्रकरणों को नियत कर निस्तारित कराये एवं अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें। सभी उपस्थित अधिकारियों द्वारा निर्देशानुसार कार्य करने एवं राष्ट्रीय लोक अदालत की सफ्लता हेतु अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की गई इसके अतिरिक्त कमलेश कुमार मौर्य, अपर जिला जज ध् सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अम्बेडकरनगर द्वारा आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के वृहद प्रचार प्रसार हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में चयनित पराविधिक स्वयं सेवकों के साथ बैठक का आयोजन किया गया।अपर जिला जज ध्सचिव द्वारा बैठक में उपस्थित पराविधिक स्वयं सेवकों को जनपद में आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के प्रचार प्रसार हेतु एवं आमजन एवं योग्य व्यक्तियों को विधिक सहायता प्रदान किये जाने हेतु निर्देशित किया गया।

धूप और गर्मी से सावधानी बरतने की दी जा रही सलाह

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान की दी गई जानकारी

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई अप्रैल के माह में ही तेज धूप और गर्मी हो रही है जिसके कारण लोग बीमार भी पड़ सकते हैं, इसी को ध्यान में रखते हुए बृहस्पतिवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. राजेश कुमार तिवारी ने धूप और गर्मी से बचाव के बारे में जानकारी दी इसके साथ जनपद में चल रहे विशेष सँचारी रोग नियंत्रण अभियान की प्रगति के बारे में भी जानकारी दी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि संचारी रोगों से बचाव के लिए तो स्वास्थ्य कार्यकर्ता समुदाय को जागरूक कर ही रहे हैं इसके साथ ही वह लोगों को अत्यधिक गर्मी के कारण होने वाली बीमारियों से बचाव के बारे में भी लोगों को जागरूक कर रहे हैं। उन्होंने धूप या अत्यधिक गर्मी के कारण होने वाली अस्वस्थता के लक्षणों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि गर्म, सूखी और लाल त्वचा, बहुत तेज सिर में दर्द, शरीर

का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या 104 डिग्री फारेनहाइट होने, मतली या उल्टी होने, मांसपेशियों में कमजोरी या ऐंठन होने, सांस फूलने या दिल की धड़कन तेज होने, घबराहट होने, चक्कर आने बेहोशी आने या हल्का सिर दर्द हैं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि ऐसी स्थिति में अत्यधिक पानी पीयें। किसी छायादार एवं ठंडी जगह पर आराम करें और संभव हो तो ठंडे पानी से नहा लें । यदि शरीर का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या 104 डिग्री फारेनहाइट से ज्यादा है, बेहोशी है धूप एवं गर्मी से मांसपेशियों में ऐंठन या अन्य कोई गंभीर लक्षण हैं तो तुरंत 108 एंबुलेंस को कॉल करें । मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कोविड के बढ़ते मरीजों की संख्या को देखते हुए लोगों से अपील की है कि वह कोविड से बचाव के प्रोटोकॉल्स जैसे मास्क लगाना, दो गज की शारीरिक दूरी का बनाए रखने एवं साबुन एवं पानी से हाथ धोएं का पालन करें भीड़ भाड़ वाले इलाकों में न जाएं और घर से बेवजह बाहर न निकलें । इसी क्रम में विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान की प्रगति के बारे जानकारी देते हुए बताया कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक से 12 अप्रैल के मध्य ग्राम स्वास्थ्य पोषण दिवस (वीएचएनडी) पर 1500 जागरूकता बैठकें की गई हैं। इस दौरान 2324 बच्चों का नियमित टीकाकरण हुआ, 2.07 लाख लोगों को पानी को साफ करने के लिए क्लोरीनेशन प्रक्रिया का प्रदर्शन कर जागरूक किया गया है। जिला मलेरिया कार्यालय की टीम द्वारा 1245 घरों का भ्रमण कर 6366 कंटेनर की जांच की गई जिसमें किसी में भी मच्छरों का लार्वा नहीं पाया गया। इसके साथ ही संभावित टीबी के लक्षण वाले 1215 व्यक्तियों की क्षय(टीबी) रोग की जांच की गई जिसमें 56 व्यक्तियों मेंटीबी की पुष्टि हुई है। इसके अलावा नगर विकास विभाग द्वारा 12 अप्रैल को नगर पालिका परिषद हरदोई के मोहल्ला, मोमिनाबाद, सराय थोक पूर्वी और कस्बा शाहाबाद में फॉगिंग कराई गई इसके अलावा अन्य विभागों द्वारा कार्ययोजना के अनुसार गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

जिलाधिकारी द्वारा ग्राम पंचायत पुंथर में स्थित तालाब का निरीक्षण

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह द्वारा तहसील टांडा अंतर्गत ग्राम पंचायत पुंथर में स्थित तालाब का निरीक्षण किया गया। यह तालाब पुंथर तालाब के नाम से जाना जाता है। वहा पर उपस्थित ग्राम वासियों द्वारा अवगत कराया गया कि यह तालाब हर मौसम में जलमग्न रहता है। यह तालाब लगभग 25 हेक्टेयर क्षेत्रफ्ल में फैली हुई है। साथ ही साथ ग्राम वासियों द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि इस तालाब में प्रवासी पक्षी के साथ साइबेरियन पक्षी भी देखे जाते हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि तालाब में प्रवास कर रहे सारस पक्षी तथा साइबेरियन पक्षी का किसी प्रकार के वाहय व्यक्तियों द्वारा हस्तक्षेप न किया जाए। जिलाधिकारी द्वारा ग्राम वासियों के सहमति से इस तालाब का नाम पुंथर लेक रखा गया जिलाधिकारी द्वारा डीपीआरओ को निर्देशित किया गया कि तालाब के किनारे खाली स्थान पर लाइट तथा साफ-सफाई कराया जाना सुनिश्चित करें। इस दौरान मौके पर मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन, डीएफ्ओ ए.के. कश्यप, जिला विकास अधिकारी विरेंद्र सिंह,उप जिलाधिकारी टांडा, क्षेत्राधिकारी टांडा,खंड विकास अधिकारी टांडा, डीपीआरओ, ग्राम प्रधान, ग्रामीण तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर एवं समस्त अनुभागों का किया गया निरीक्षण

संवाददाता, सुलतानपुर। जिलाधिकारी जसजीत कौर द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर स्थित भूलेख अनुभाग, ई-डिस्ट्रिक्ट कार्यालय, इंग्लिश आफिस, मुख्य राजस्व लेखाकार अनुभाग, सीलिंग अनुभाग, आयुध अनुभाग, चकबन्दी कार्यालय एवं न्यायालय तथा कोविड कन्ट्रोल रूमध्आपदा कन्ट्रोल रूम साहित विभिन्न पटलों का निरीक्षण कर सम्बन्धित से जानकारी प्राप्त की गयी तथा सम्बन्धित को निर्देशित किया गया कि विभिन्न पटलों की साफ-सफाई के साथ-साथ अभिलेखों के रख-रखाव आदि को सुव्यवस्थित ढंग से रखे जाने हेतु निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर एवं समस्त अनुभागों का निरीक्षण किया गया, जिसके अन्तर्गत परिसर में साफ-सफाई कराये जाने एवं वादकारियों एवं जन सामान्य को शुद्ध पेयजल की व्यवस्था कराये जाने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) बी0 प्रसाद, अपर जिलाधिकारी (वि0ध्ा0) मनोज कुमार पाण्डेय, उप जिलाधिकारी विदुषी सिंह, कलेक्ट्रेट नायब नाजिर अलेन्द्र सहित अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

एबीवीपी ने डॉ भीमराव अंबेडकर वक्तित्व एवं व्यक्तित्व विषय पर संगोष्ठी आयोजित की

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर एक संगोष्ठी का आयोजन राणा प्रताप पीजी कॉलेज सुलतानपुर इकाई द्वारा आयोजित किया गया। जिसका विषय डॉ भीमराव अंबेडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व रखा गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ सुल्तानपुर विभाग प्रमुख डॉ संतोष कुमार सिंह अंश, मुख्य वक्ता डॉ सीमा सिंह इकाई मंत्री सत्यम त्रिपाठी द्वारा डॉ भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्पार्चन द्वारा हुआ। संगोष्ठी में विषय रखते हुए विभाग प्रमुख डॉ संतोष अंश ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर की 14 अप्रैल को 132 वीं जयंती भारत सहित पूरी दुनिया में एक उत्सव के रूप में मनाई जा रही है। आंबेडकर जयंती को 'समानता दिवस' और 'ज्ञान दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है, क्योंकि जीवन भर समानता के लिए संघर्ष करने वाले डॉ. आबेडकर को समानता और ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। भीमराव अंबेडकर को हमारे देश के संविधान का जनक कहा जाता है। देश के संविधान का मसौदा तैयार करने के अलावा बाबा साहब ने एक अर्थशास्त्री, समाज सुधारक और वकील के रूप में उन्होंने भारत के सबसे महत्वपूर्ण आंदोलनों में अहम भूमिका निभाई। इसके अलावा उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने अनुभवों के आधार पर उस समय बाबा साहब ने जो बातें कहीं, वो आज भी लोगों के लिए प्रेरणादायी हैं और भटके हुए लोगों को भी सही राह दिखाती हैं। बाबा साहब समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अच्छे से समझते थे। उनका मानना था कि हर व्यक्ति को समाज के लिए कुछ करना चाहिए ताकि उसके आसपास के लोग भी बेहतर जीवन जी सकें। मुख्य वक्ता डॉ सीमा सिंह ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब खुद की क्षमताओं पर यकीन रखते थे। उनका मानना था कि अगर व्यक्ति को खुद पर भरोसा है तो वो बड़े से बड़ा काम भी आसानी से कर सकता है। नवनीत ने कहा कि संविधान शिल्पी हमारे देश में डॉ. भीम राव आंबेडकर को समानता और न्याय का प्रतीक माना जाता है। वह एक महान सामाजिक कार्यकर्ता थे। सभी भारतीयों में समानता लाने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की। उनका कहना था कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है। समय आने पर भूखे रहो लेकिन अपने बच्चों को पढ़ाओ। प्रगति श्रीवास्तव ने कहा कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के मुताबिक प्रत्येक छात्र को अपने चरित्र का निर्माण प्रज्ञा, शील, करुणा, विद्या और मैत्री इन पंचतत्वों के आधार पर करना चाहिए। इकाई मंत्री सत्यम त्रिपाठी ने अतिथियों और विद्यार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित किया। संगोष्ठी का संचालन विवेक ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के विद्यार्थी और कालेज इकाई के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बसखारी पुलिस ने छेड़छाड़ /दुष्कर्म करने वाला 1 नफर वाँछित/ फरार अभियुक्त को किया गिरफ्तार

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। मा0 मुख्यमंत्री जी उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा प्रदेश में लागू अपराध मुक्त नीति के आलोक में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध अंबेडकरनगर पुलिस अधीक्षक अजीत कुमार सिन्हा जनपद अंबेडकरनगर द्वारा चलाये जा रहे धर पकड़ के सघन अभियान व मिशन शक्ति/ महिला सशक्तिकरण अभियान के तहत आज दिनांक.12/04/2023 को बसखारी प्रभारी निरीक्षक अश्विनी कुमार मिश्र मय फ्रेर्स द्वारा चेकिंग वाहन व थाना स्थानीय पर पंजीकृत 70/23 धारा 376/313/504/506/406 से सम्बन्धित वांछित चल रहे अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु क्षेत्र में मामूर थे कि जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि लड़की से छेड़छाड़ध्दुष्कर्म करने वाला अभियुक्त दरगाह नई बस्ती मोड़ के पास 12रू40 बजे पर खड़ा था। इस सूचना पर बसखारी पुलिस टीम द्वारा शोयब शाह पुत्र अब्दुल हक शाह निवासी दरगाह रसूलपुर थाना बसखारी की पुलिस ने हिरासत में लिया गया । गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध थाना स्थानीय पर नियमानुसार विधिक कार्यवाही करते हुए मा0 न्यायालय के समक्ष जेल भेजा गया

सूर्यलाल क्रय-विक्रय समिति के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

नवाबगंज, गोण्डा। वरिष्ठ भाजपा नेता सूर्यलाल दूबे सहकारी क्रय-विक्रय समिति के अध्यक्ष एवं सुरेंद्र प्रताप सिंह उपाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए। गुरूवार को सहकारी क्रय-विक्रय समिति का चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुआ। चुनाव में सूर्यलाल दूबे के विरूद्ध अन्य कोई नामांकन नहीं हुआ और वह निर्विरोध रूप से अध्यक्ष निर्वाचित हो गये। श्री दूबे कई वर्षों से भारतीय जनता पार्टी में सक्रिय हैं और कई अहम जिम्मेदारियों का निर्वहन कर चुके हैं। उपाध्यक्ष पद पर सुरेंद्र प्रताप सिंह भी निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री दूबे ने कहा कि सहकारी क्रय-विक्रय समिति का भवन जर्जर हो चुका है जिसका जीर्णोद्धार उनकी पहली प्राथमिकता है। इसके साथ ही समिति से जुड़े किसानों के हितों का ध्यान रखा जायेगा। इस मौके पर मनकापुर भाजपा विधायक प्रतिनिधि वेदप्रकाश दूबे, भाजपा प्रदेश परिषद सदस्य बाबूलाल शास्त्री, मंडल अध्यक्ष पिंकू सिंह, जिला उपाध्यक्ष सुरेश शुक्ला, पप्पू सिंह, आनंद दूबे, सचिव मनोज सिंह उपस्थित रहे।

सेवानिवृत्त शिक्षक को समारोह पूर्वक सम्मानित कर दी गई विदाई

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

कटरा बाजार, गोण्डा। क्षेत्र के ब्लॉक संसाधन केंद्र वीरपुर कटरा बाजार में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष आनंद कुमार तिवारी व विशिष्ट अतिथि महामंत्री विजय नारायण पांडेय व इंद्र प्रताप सिंह रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर सरस्वती वंदना के साथ किया गया। संचालन रंजीत यादव व राम आशीष तिवारी ने किया। सेवानिवृत्त शिक्षक प्रेमनाथ तिवारी को मुख्य अतिथियों क्रमश: आनंद कुमार तिवारी, जय नारायण पांडेय व इंद्र प्रताप सिंह द्वारा अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, पेन, डायरी देकर सम्मानित किया गया। वहीं कवि महेश ने रचना के माध्यम से आये हुए अतिथियों को मंत्र मुग्ध कर दिया। उक्त अवसर पर प्राथमिक शिक्षक संघ के संयुक्त मंत्री वीरेंद्र कुमार तिवारी, रमेश चंद्र वर्मा प्रधानाचार्य भारतीय इंटर कॉलेज कटरा बाजार मिथिलेश चंद्र, सभा अध्यक्ष भोला नाथ द्विवेदी, विजय प्रकाश द्विवेदी, महेश्वर बक्स सिंह पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ कटरा बाजार, मोहम्मद याकूब सिद्दीकी, इंद्रसेन मिश्र, हरिकिशन यादव, उमेश मिश्रा मंडल अध्यक्ष जीत बहादुर सिंह, ललित कनौजिया सहित तमाम शिक्षक उपस्थित रहे।

मण्डल मुख्यालय गोण्डा में ही बनेगा विश्वविद्यालय : ओंकार पाठक

एलबीएस कॉलेज के सेवानिवृत्त अध्यापकों व कर्मचारियों ने बैठक कर बनाई रणनीति

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

गोण्डा। मंडल मुख्यालय, गोण्डा पर विश्वविद्यालय स्थापना को लेकर लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के सेवानिवृत्त अध्यापकों तथा कर्मचारियों की एक बैठक रामलो अविवि, अयोध्या शिक्षक संघ महामंत्री प्रो. जितेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में विज्ञान परिसर में संपन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि सेवानिवृत्त शिक्षक व कर्मी भी ऑक्टा महामंत्री तथा एलबीएस कॉलेज शिक्षक संघ द्वारा संचालित आंदोलन को समर्थन देंगे। बैठक में यह भी कहा गया कि यदि गोंडा मुख्यालय पर विश्वविद्यालय स्थापित होगा तो सेवानिवृत्त शिक्षक आवश्यकता पड़ने पर अवैतनिक रूप से शिक्षण कार्य करने को तत्पर होंगे। बैठक में आए शिक्षकों, कर्मचारियों को संबोधित करते हुए डॉ. ओंकार पाठक ने कहा कि बलरामपुर के लोग चाहे जितना जोर लगा लें, विश्वविद्यालय गोंडा मंडल मुख्यालय पर ही स्थापित होगा। इसके लिए जो रणनीति बनाई गई है, उस पर अगले कुछ दिनों में कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी। डॉ. डीके गुप्ता ने कहा कि बलरामपुर के लोग भ्रम फैला रहे हैं, किंतु अपनी योजना में सफ्ल नहीं होंगे। बलरामपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना तर्क हीन है। डॉ. पीएन लाल ने कहा कि सबसे पहले मैंने ही सन 2000 में यहां पर विश्वविद्यालय की मांग की थी, जिसे अखबारों ने छापा भी था। उन्होंने कहा कि जब देवीपाटन के नाम से गोंडा में मंडल की स्थापना हो सकती है तो विश्वविद्यालय की क्यों नहीं? डॉ. संतराम मिश्रा ने कहा कि गोंडा की केंद्रीय अवस्थिति यहां विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए सर्वथा उपयुक्त है। डॉ मिथिलेश मिश्र ने कहा कि उच्च शिक्षा से संबंधित सर्वोच्च प्रतिष्ठान शीर्षस्थ केंद्र पर ही स्थापित होना चाहिए। डॉ जीएल प्रजापति ने कहा कि यदि गोंडा की महत्ता ना होती तो यहां देवीपाटन मंडल ही स्थापित न होता। राधे श्याम त्रिपाठी ने कहा कि कैबिनेट का निर्णय है कि विश्वविद्यालय मंडल मुख्यालय पर ही स्थापित हो। इसी के मद्देनजर डोमा कल्पी में विश्वविद्यालय स्थापना की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। मंगल प्रसाद ने कहा कि हम तन मन धन से संघर्ष के लिए तैयार हैं। एके नंद ने कहा कि भौगोलिक, राजनीतिक, प्रशासनिक व जनहित की दृष्टि से गोंडा ही विश्वविद्यालय के लिए उपयुक्त है। अर्जुन वर्मा, विष्णु प्रसाद, अयोध्या प्रसाद ने भी अपने विचार रखे।

पी. बी. सोसाइटी ज्वैलर्स की भव्य प्रदर्शनी आयोजित

संवाददाता

कानपुर। उत्तर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी कानपुर के बिरहाना रोड स्थित बाजार में प्रतिष्ठित और जाना माना नाम है पीवी सोसाइटी ज्वैलर्स अपनी उम्कृष्ट डिजाइनर ज्वैलरी, 120 वर्षों से ज्यादा का विश्वास और ग्राहकों के प्यार के दम पर पीबी सोसाइटी ज्वैलर्स ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। पी.बी. सोसाइटी ज्वैलर्स ने अपने नवीनीकृत शोरूम का भव्य उद्घाटन बुधवार दिनांक 12.04.2023 को बड़े ही धूम-धाम से आयोजित किया। शोरूम का उद्घाटन यूपी सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष महेशचंद्र जैन के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर निदेशक महेशचंद्र जैन ने प्रेसवार्ता में बताया कि हमारे यहां भारत के हर कोने से जुड़े खास आभूषण हैं इनमें मुम्बई फैन्सी ज्वैलरी, साउथ की टैम्पल एवं एथनिक ज्वैलरी, अहमदाबाद एंटिक ज्वैलरी और राजस्थान की जड़ाऊ पोल्की ज्वैलरी भी शामिल है। शोरूम में अर्न्तराष्ट्रीय ज्वैलरी जैसे इटली की फैन्सी ज्वैलरी और तुर्की की लाइट वेट ज्वैलरी भी मौजूद है जिसे ग्राहक काफी पसन्द कर रहे हैं। शोरूम को कुछ इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यहां हर तरह के आभूषणों को अलग-अलग सेगमेंट बने हुए हैं ताकि ग्राहकों को खरीदारी करने में सुविधा हो। इस नवीनकृत शोरूम में ग्राहकों को एक्सक्लूसिव डिजाइनें खूब पसन्द आ रही है। अमेरीका से अपनी पढ़ाई पूरी कर लौटीं पीबी सोसाइटी ज्वैलर्स की पांचवी पीढ़ी वेदिका जैन ने डिजाइनिंग की कमान अपने हाथों में ली है। उनके साथ मेरा अनुभव और करूणा जैन का हुनर जुड़ा है। निदेशक प्रशांत जैन व श्रीमती करूना जैन ने बताया कि उद्घाटन के इस अवसर पर हमने 7 दिवसीय इनॉगरल ऑफर रखा है जो 12 से 19 अप्रैल 2023 तक चलेगा। इस ऑफर के अन्तर्गत ग्राहकों को मिनिमम मेकिंग चार्जेस का लाभ मिल रहा है। ग्राहक जमकर खूब खरीदारी कर रहे हैं और ऑफर का लाभ उठा रहे हैं। पोल्की ज्वैलरी की खरीद में ट्रांसपेरेंसी का अभाव था। अधिकाशं ज्वैलर्स पोल्की के बारे में ग्राहकों को हर बात पारदर्शिता के साथ नहीं बताते। पोल्की ज्वैलरी को खूबसूरत बनाने के लिए नग, नगीनों, हीरों के साथ, अन्य स्टोन्स का भी इस्तेमाल होता है। यही वजह है कि पोल्की ज्वैलरी को बेचने या बदलने पर ग्राहकों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है। 120 साल का अनुभव और पांच पीढियों की विरासत संजोए पीबी सोसाइटी ज्वैलर्स ने इस अदभुत ज्वैलरी की साख बरकरार रखने के लिए पहली बार ऐसा कदम उठाया है, जिसमें ईमानदारी और साहस का संगम है। कार्यक्रम के दौरान प्रमुख रूप से कम्पनी के निदेशक महेशचंद जैन, प्रशांत जैन, करूणा जैन, वेदिका जैन सांसद सत्यदेव पचौरी पूर्व विधायक सतीश निगम एवं जीएम रोहित कुमार पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

युवक की धारदार हथियार से हत्या

कमरे में खून से लथपथ मिला शव, बदबू आने पर लोगों ने पुलिस को दी जानकारी

संवाददाता

प्रयागराज। धारदार हथियार से गला रेत कर युवक की हत्या कर दी गई। कमरे के बाहर बदबू आने पर स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। यह घटना थरवई थाना क्षेत्र के पैगंबरपुर गांव का है। राहुल यादव (25) पुत्र मूलचंद यादव अपने पुश्तैनी मकान से दूर पैगंबरपुर चौराहे पर एक कमरे में रहता था।शहर के एक निजी अस्पताल में वह काम करता था। जिसकी धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या कर दी गई। कमरे से बदबू आने पर स्थानीय लोगों ने परिजनों

के साथ-साथ मामले की जानकारी थरवई पुलिस को दी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने कमरे का शटर उठाया तो बिस्तर पर युवक की लाश देखकर चीख मच गई।पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

मांग को लेकर आयोग पर डटे रहे प्रतियोगी, तेरहवीं बार सौपा ज्ञापन,जल्द शुरु होगा आमरण अनशन

संवाददाता, प्रयागराज। प्रतियोगी छात्रों ने अपनी मांग को लेकर आयोग पर जमे रहे। प्रतियोगी छात्र मोर्चा के बैनर तले विक्की खान के नेतृत्व में सैकड़ों प्रतियोगी छात्रों ने लोक सेवा आयोग पर लगातार 8वें दिन अपना क्रमिक अनशन जारी रहा। पुलिस बल मौजूद होने के बाद भी आयोग के अधिकारियों द्वारा आयोग का मुख्य गेट बंद कर दिया गया थास मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष विक्की खान ने बुधवार को 13वीं बार अपना ज्ञापन सौंपा। जिसमें एल टी जीआईसी 2018 के शेष बचे 08 विषयों की अवशेष श्रेष्ठता सूची (द्वितीय सूची)जारी करने की मांग की गई। तथा लोक सेवा आयोग के गेट पर विक्की खान के नेतृत्व में प्रतियोगी छात्रों ने लोक सेवा आयोग

के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। विक्की खान ने कहा कि यह क्रमिक अनशन तबतक जारी रहेगा ,जब तक आयोग द्वारा एल टी जीआईसी 2018 की अवशेष श्रेष्ठता सूची जारी नहीं कर दी जाती है। 15 अप्रैल तक अगर यह सूची जारी नहीं की जाती है तो प्रतियोगी छात्र मोर्चा लोक सेवा आयोग पर आमरण अनशन शुरू करने को विवश होंगे और इसकी पूरी जिम्मेदारी लोक सेवा आयोग पर रहेगी। प्रदर्शन करने वालों में कृपाशंकर निरंकारी,अंजनी कुमार पांडे, लकी दुबे,अजय अवस्थी, संजय चौधरी, लोकेंद्र शुक्ला, प्रवेश श्रीवास्तव, उषा देवी ,संजीव मिश्रा,आलोक सिंह, सरबिंद पांडे, बृजेश सरोज, राजीव रंजन, रवीश जयसवाल,शैलेश कुमार, सुनील कुशवाहा, मुकेश कुमार, अखिलेश त्रिपाठी, चंद्रमा प्रसाद आदि लोग मौजूद थे।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना स्थल का किया निरीक्षण

डीएम ने चुनाव से जुड़ी व्यवस्थाओं को परखते हुए दिये निर्देश

संवाददाता

प्रयागराज। जिलाधिकारी,जिला निर्वाचन अधिकारी संजय कुमार खत्री ने बुधवार को नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन की तैयारियों को परखा। साथ ही मुण्डेरा मण्डी में वेयर हाउस, स्ट्रांग रूम, चिन्हित मतगणना स्थल का निरीक्षण किया।उन्होंने एडीएम वित्त एवं राजस्व जगदम्बा सिंह, सिटी मजिस्ट्रेट सत्यप्रिय सिंह, उप निदेशक मण्डी व अन्य सम्बंधित अधिकारियों से नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन हेतु कुल ईवीएम मशीनों की आवश्यक संख्या, उपलब्ध मशीनों की संख्या,

मशीनों का रैण्डमाइजेशन, टेस्टिंग, क्रियाशीलता, बैलेट पेपर लगाने, प्रशिक्षण हेतु ईवीएम की उपलब्धता आदि के बारे में जानकारी करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने ईवीएम मशीनों की सुरक्षा में लगे सुरक्षा कर्मियों को ईवीएम मशीनों की सुरक्षा में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतने, ड्यूटी का निर्वहन मुस्तैदी के साथ करने के लिए कहा है। नगर निगम व सम्बंधित विभागों को मुण्डेरा मण्डी के स्ट्रांग रूम, मतगणना स्थल व आस-पास की गंदगी को साफकर मण्डी परिसर को स्वच्छ बनाने के निर्देश दिए है। उन्होंने मुण्डेरा मण्डी में मैप के अनुसार रूट चार्ट बनाने व बैरिकेटिंग की अच्छी व्यवस्था किए जाने हेतु सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है। इस अवसर पर उप संचालक चकबंदी पुष्कर, उप निदेशक मण्डी कुलभूषण सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मुकेश कुमार सीटीआई को लगातार दूसरी बार मुरादाबाद मंडल में स्थान पाने पर डीआरएम द्वारा किया सम्मानित

संवाददाता, जनपद हापुड़ के मीनाक्षी रोड रोड पर स्थित शास्त्री नगर निवासी मुकेश कुमार सीटीआई को लगातार दूसरी बार डीआरएम द्वारा सम्मानित किया गया आपको बता दें कि कुछ दिनों पहले रेलवे मुरादाबाद मंडल को उनके द्वारा 78 लाख 74 हजार 60 वार्षिक इनकम कराई गई थी वही डीआरएम अजय नंदन द्वारा मुकेश कुमार को नगद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया था। इसकी खुशी में समाज के बुद्धिजीवी लोगों ने उनके निवास स्थान शास्त्री नगर में पहुंचकर मुंह मीठा करा खुशी मनाई और उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं की।

मेरठ से हापुड़ में अवैध शस्त्रों की डिमाण्ड आने पर सप्लाई करने वाले सरगना सहित 7 लोग गिरफ्तार

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ के थाना गढ़मुक्तेश्वर पुलिस ने अवैध असलहा तस्कर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के सरगना तालिब सहित 07 सदस्यों को किया गिरफ्तार। जिनके कब्जे से 10 अवैध पिस्टल मय 04 मैग्जीन, 03 अवैध रिवाल्वर, 05 अवैध तमंचे, 02 अवैध पोनिया तथा 25 जिन्दा कारतूस बरामद हुए हैं वहीं पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने पुलिस लाइन में प्रेस वार्ता करते हुए बताया कि थाना गढ़मुक्तेश्वर पुलिस ने स्यान चौपला बृजघाट की ओर रास्ते पर निकट पेट्रोल पंप पर चेकिंग के दौरान तालिब व 15 हजार रुपये का इनामी बदमाश शहजाद उर्फबन्टी थाना हापुड़ नगर क्षेत्र में हुई डकैती की घटना में वांछित चल रहा बदमाश सहित हसनैन,शादाब,आकिब, सुहेल व कासिम मेरठ निवासी 7 लोगों को गिरफ्तार किया है जो हापुड़ से डिमांड आने पर अभियुक्तगण अवैध पिस्टल को 40-45 हजार रुपये में, रिवाल्वर को 20-30 हजार रुपये

में, पोनिया को 08-10 हजार रुपये में तथा तमंचे को 5-7 हजार रूपये में बेचकर आर्थिक लाभ कमाते थे। जो अवैध शस्त्रों को डिमाण्ड मिलने पर अन्य अपराधी किस्म के लोगों को सप्लाई करते थे। गिरफ्तार अभियुक्तगण शातिर किस्म के अपराधी हैं जिनके आपराधिक इतिहास की जानकारी अन्य जनपदों से की जा रही है वहीं पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने अभियुक्तों की गिरफ्तारी एवं बरामदगी करने वाली पुलिस टीम को 10 हजार रुपये के इनाम से पुरस्कृत किया गया।

फजिर की नमाज बाद मोमबत्ती की रौशनी में निकलेगा मस्जिद काजी साहब से ताबूत का जुलूस

संवाददाता

प्रयागराज। अन्जुमन गुन्चा ए क़ासिमिया व मोमनीन इलाहाबाद की ओर से माहे रमजान की इक्कीसवीं ब्रहस्पतवार को भोर में शहादत हजरत अली पर मस्जिद क़ाजी साहब की व आस पास की सभी लाईटों को बुझा कर मोमबत्ती की रौशनी में हजरत अली इब्ने अबुतालिब का ताबूत निकाला जायगा। अन्जुमन गुन्चा ए क़ासिमिया के प्रवक्ता सैय्यद मोहम्मद अस्करी के अनुसार भोर में तक़रीबन 4रू45 पर मौलाना जवादुल हैदर रिजवी नमाज ए फजिर बाजमात अदा कराएंगे तत्पश्चात मस्जिद की लाईट बन्द कर मजलिस शुरु होगी जिसे मौलाना सैय्यद रजी हैदर रिजवी साहब क़िब्ला खिताब करेंगे।बाद मजलिस शबीहे ताबूत मौला ए कायनात हजरत अमीरुल मोमेनीन को नौजवान कांधा देकर मस्जिद में गश्त कराने के उपरांत मस्जिद के बाहर गलियों में भ्रमण करते हुए या अली मौला हैदर मौला की फ्लक शिगाफ सदाओं को बुलन्द करते हुए अहाता खुरशेद हुसैन मरहूम तक लेकर जाएंगे।वहीं दूसरी ओर शहर का दूसरा सबसे बड़ा क़दीमी जुलूस प्रात: 5रू45 पर रानीमंडी स्थित इमामबारगाह आजम हुसैन से निकलेगा जो रानीमंडी,बच्चा जी धर्मशाला, चड्डा रोड ,कोतवाली ,नखास कोहना ,खुलदाबाद ,हिम्मतगंज होते हुए चकिया स्थित शिया बड़ी करबला तक जाएगा।जुलूस से पहले काजिम अब्बास सोजख्वानी करेंगे और

मौलाना जीशान हैदर मजलिस को खिताब करेंगे।अन्जुमन अब्बासिया अलम ताबूत के साथ नौहाख्वानी करते हुए जुलूस के साथ रहेगी।वहीं रानीमंडी इमामबाड़ा आबिदया से ताबूत अलम व जुलजनाह का क़दीमी जुलूस मिर्जा काजिम अली ,हसन नक़वी ,इशत आब्दी की क़यादत में अपने परम्परागत मार्गो से होते हुए चकिया करबला जाएगा। दरियाबाद के पठनवल्ली स्थित इमामबाड़ा हुसैन अली खां से दिन में एक बजे शहादत हजरत अली पर जुलूस निकाला जाएगा।मौलाना अशरफअब्बास खान मजलिस पढ़ेंगे व अन्जुमन हाशिमया दरियाबाद नौहा और मातम का नजराना पेश करते हुए जुलूस में शरीक रहेगी।जुलूस दरियाबाद क़ब्रिस्तान में पहुंच कर सम्पन्न होगा। इमामबाड़ा मोजिजनुमा से शहादत हजरत अली पर जुलूस रात 8रू30 पर निकाला जाएगा जिसको नजीब इलाहाबादी के संचालन में रजा हसनैन खिताब करेंगे अन्जुमन मोहाफिजे अजा क़दीम नौहा पढ़ेगी।

शबे शहादते मौला अली पर रानीमंडी दरियाबाद व करैली में निकाला गया जुलूस

माहे रमजान की बीसवीं को भोर में मस्जिद क़ाजी साहब बख्शी बाजार से मजलिस का आगाज हुआ।जवादुल हैदर रिजवी की क़यादत में फजिर की नमाज बाजमात के बाद डा.रिजवान हैदर रिजवी ने मजलिस को खिताब किया।बाद मजलिस मस्जिद में नमाजीयों ने या अली मौला हैदर मौला की सदाएं बुलन्द करते हुए मातम किया।वहीं दरियाबाद में इमामबाड़ा अरब अली खां में भी शबे शहादत पर मजलिस हुई। अन्जुमन हाशिमया ने नौहा पढ़ा।मस्जिद गदा हुसैन दरियाबाद में मजलिस को मौलाना जाबिर अब्बास ने खेताब किया।करैलाबाग में मुसल्ला ए जीशान में लाईटों को बन्द कर मजलिस आयोजित की गई । रेयाज मिर्जा व शुजा मिर्जा ने गमगीन मर्सिया पढ़ा तो मौलाना आमिरुर रिजवी ने शहादत ए हजरत अली अलैहिस्सलाम के मसाएब पढ़ें। अन्जुमन गुन्चा ए क़ासिमिया ने नौहा और मातम का नजराना पेश किया। रानीमंडी चकय्यानीम स्थित नवाब नन्हे की कोठी से असगर अब्बास की देख रेख में देर रात निकाले जुलूस में बड़ी संख्या में अक़ीदतमन्दों ने शिरकत की।

पेरियार काव्य रत्न सम्मान से सम्मानित हुए बेखौफ शायर

संवाददाता, हापुड़ के ग्राम मुरादपुर की सागर कालोनी में रहने वाले मशहूर शायर डॉ नरेश सागर को राष्ट्र पिता ज्योतिबापुले जी के जन्म दिवस पर उनकी बेवाक और बेखौफ लेखनी के लिए बहुजन नायक पेरियार काव्य रत्न सम्मान 2023 से मेरठ के भगवतपुरा में द लॉर्ड बुद्धा सोसाइटी ने सम्मानित किया गया जिसके विशिष्ट अतिथि और सहयोगी डॉ. हरविंदर रहे!

बेखौफशायर से दुनिया भर में मशहूर डॉ. नरेश सागर ने बताया कि इसी सप्ताह प्रियदर्शी साहित्यकार व ज्योतिबापुले रत्न सम्मान से भी सम्मानित किया गया है! डॉ. सागर ने मंच से पढा कि संविधान के हम रखवाले, कह दो ये गद्दारों से ,बहुत हो लिए जुल्म तुम्हारे, खेलो ना अंगारों से पेरियार काव्य रत्न सम्मान समारोह व कवि सम्मेलन में मध्य प्रदेश के हास्य कवि मनोहर बौद्ध भी शामिल रहे।

चेकिंग को दौरान चोरी की स्कूटी बरामद

संवाददाता, कानपुर शहर क्षेत्र में वाहनों की चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था । वाहन चेकिंग के दौरान टाटमिल चौराहा पर टीएसआई चन्द्रभान द्वारा वाहन संख्या 8435 स्कूटी को रोका गया तो चालक अपना वाहन छोडकर भाग गया । उक्त वाहन के बारे में जानकारी करने पर ज्ञात हुया कि उक्त वाहन चोरी हो गया था । उक्त स्कूटी के नम्बर प्लेट के आधार पर वाहन स्वामी का नाम पता तस्दीक करके लिस आयुक्त यातायात महोदया शिवा सिंह द्वारा वाहन स्वामी कमलेश कुमार द्विवेदी पुत्र विपिन बिहारी द्विवेदी -1 वीपी-ब्लॉक कुंज विद्या यशोदा नगर को यातायात पुलिस लाइन में बुलाकर वाहन सुपुर्द किया गया ।

आत्महत्या के दुष्प्रेरण का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

संवाददाता, शुक्लागंज, उन्नाव। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा के आदेश एवं अपर पुलिस अधीक्षक शशि शेखर व क्षेत्राधिकारी नगर आशुतोष कुमार के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम मे कोतवाली गंगाघाट पुलिस ने आत्महत्या के दुष्प्रेरण के वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार बुधवार को आत्महत्या के दुष्प्रेरण का वांछित अभियुक्त मनोज सिंह चन्देल पुत्र त्रिभुवन सिंह निवासी आदर्श नगर को राजधानी मार्ग स्थित एक्सिस बैंक के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में निरीक्षक अवधेश कुमार, हे0का0 सतीश कुमार राय, का0 यशवीर सिंह रहे।

किसान मोर्चा महामंत्री ने भगवान परशुराम महासभा की ग्रहण की सदस्यता

संवाददाता, भगवान परशुराम महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री भूपेश अवस्थी जी अध्यक्षता में भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा जूही मंडल के महामंत्री डा समरदीप पांडेय अपने पिता आचार्य पंडित मदन मोहन पांडेय शास्त्री एवं कई पदाधिकारियों के साथ जाकर परशुराम महासभा की सदस्यता ग्रहण की। अध्यक्ष भूपेश अवस्थी जी ने आचार्य मदन मोहन पांडेय सहित सभी को माला एवं अंगवस्त्र पहनाकर शिष्टाचार भेंट की तथा सभी को सदस्यता दिलाई। भगवान परशुराम महासभा में डा समरदीप पांडेय सहित जिला कार्यकारिणी सदस्य अवध बिहारी अवस्थी, विनय मालवीय, अनिल माथुर, मुकेश रावत, राजकुमार दीक्षित, ने सदस्यता ग्रहण कर भूपेश अवस्थी जी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

हत्या में वांछित चल रहा, 10 हजार रुपये का इनामिया गिरफ्तार

संवाददाता, कोतवाली सदर, उन्नाव। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा के आदेश एवं अपर पुलिस अधीक्षक शशि शेखर व क्षेत्राधिकारी नगर आशुतोष कुमार के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में कोतवाली सदर पुलिस एवं स्वाट और सर्विलांस टीम द्वारा हत्या के वांछित एवं 10 हजार रुपये के इनामिया अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के अनुसार बुधवार को मुकदमा का वादी श्री कृष्ण कुमार तिवारी की तहरीरी सूचना के आधार पर उसके स्वयं के भाई मृतक जगत नारायण तिवारी की हत्या किये जाने के सम्बन्ध में धारा 394/411/34/302 पंजीकृत कराया गया था । तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक अरविन्द सिंह द्वारा अभियुक्त सुशील नाथ पुत्र लक्कड नाथ निवासी ग्राम बंसटी थाना चौबे पुर जनपद कानपुर नगर गिरफ्तार किया गया था, जिसमें सुशील नाथ द्वारा उसके सहयोगी अशोक नाथ पुत्र हरपाल नाथ निवासी पसईपुर थाना फफूंद जिला औरैया उम्र करीब 30 वर्ष के साथ मिल कर हत्या किया जाना स्वीकार किया गया था। अभियुक्त की निशानदेही पर उक्त घटना में लूट की सामाग्री एक विद्युत तार बंडल रेलवे क्रासिंग मरहैला के पास बरामद हुआ था। शेष अभियुक्त अशोक नाथ पुत्र हरपाल नाथ निवासी पसईपुर थाना फफूंद जिला औरैया उपरोक्त के लगातार फरार रहने के कारण न्यायालय से गैर जमानती वारण्ट 82 व 83 के आदेश प्राप्त किय गये तथा नियमानुसार तामीला एवं कार्यवाही की गयी । पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा दिनांक 25.05.2019 को अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु 10,000/- का इनाम घोषित किया गया था।

अवैध तमंचा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

संवाददाता, अजगैन, उन्नाव पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा के आदेश एवं अपर पुलिस अधीक्षक व क्षेत्राधिकारी हसनगंज के कुशल निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम मे थाना अजगैन पुलिस द्वारा एक अभियुक्त को एक अदद तमंचा 315 बोर व 2 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद कर गिरफ्तार किया गया। आज बुधवार को उ0नि0 हरिशंकर सिंह मय हमराह फोर्स द्वारा निशभी मोड़ के पास से अभियुक्त संजय पासी पुत्र स्वरू सरजू लाल पासी नि0 ग्राम धौकल खेडा मजरा सरांय चन्दन थाना अजगैन उम्र करीब 38 वर्ष को कब्जे से एक अदद तमंचा 315 बोर व 2 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद कर गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर धारा 3/25 आर्म्स एक्ट पंजीकृत किया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उ0नि0 हरिशंकर सिंह, का0 पुष्पेन्द्र सिंह, का0 गौरव कुमार रहें।

राजर्षि टंडन मुक्त विश्व विद्यालय में पुरातन छात्र सम्मेलन

संवाददाता, प्रयागराज। उ प्र राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में बृहस्पतिवार को पुरातन छात्र सम्मेलन का वृहद आयोजन किया जा रहा है। रजत जयंती वर्ष में आयोजित हो रहे इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के पुरातन छात्र अपनी खट्टी मीठी यादों को साझा करेंगे। पुरातन छात्र परिषद के अध्यक्ष डा.ज्ञान प्रकाश यादव ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के अटल प्रेक्षागृह में दोपहर 2 बजे सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि विश्व के वयोवृद्ध संत पद्मश्री महायोगी शिवानंद जी महाराज, शिवानंद आश्रम, कबीर नगर, वाराणसी करेंगे। योग के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर चुके 127 वर्षीय शिवानंद तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ गोविंद के कर कमलों से पद्मश्री सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि पुरातन छात्र सम्मेलन की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह करेंगी। इस अवसर पर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पृथ्वीश नाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी के पूर्व कुलपति प्रो.जे. वी.वैशम्पायन, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रो.हरिकेश सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। सम्मेलन में कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह विशिष्ट पुरातन छात्रों का सम्मान करेंगी।

28 घंटे बाद प्रयागराज पहुंचा अतीक अहमद का काफिला, रहेगा सेंट्रल जेल की हाई सिक्योरिटी बैरक में

संवाददाता, प्रयागराज। उमेश पाल अपहरण केस के मुख्य आरोपी माफिया अतीक अहमद को पुलिस गुजरात की साबरमती सेंट्रल जेल से प्रयागराज लेकर आ गई है। अतीक के पहुंचने से पहले नैनी जेल के बाहर सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। अशरफ के भी प्रयागराज पहुंचने के बाद यहीं रखा जाएगा। जेल में माफिया अतीक को ?हाई सिक्योरिटी बैरक में रखा जाएगा और सीसीटीवी कैमरों से बैरक लैस होगी। वहीं अशरफको भी दूसरी बैरक में रखा जाएगा। डीजीपी मुख्यालय की तरफसे मॉनिटरिंग की जाएगी। इसके अलावा कारागार मुख्यालय में लाइव फीड वीडियो वॉल पर रहेगी। इसे लेकर डीजी कारागार की ओर से आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। माफिया अतीक को लाने के लिए यूपी पुलिस के काफिले को करीब 28 घंटे का समय लगा। माफिया अतीक को यूपी पुलिस कड़ी सुरक्षा के बीच तीन राज्यों को पार करके लाई है। पुलिस अतीक को गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान होते हुए यूपी लाई है।अतीक अहमद को प्रयागराज की अदालत में पेश किया जाएगा।

चीन की वन चाइल्ड पॉलिसी का असर

चीन ने ताइवान को डराने के लिए शुरू किया सैन्य अभ्यास

तइपे रक्षा क्षेत्र में भेजे 71 चीनी विमान और 9 जहाज

एजेंसी, बीजिंग। दुनिया पर राज करने का सपना पूरा करने के लिए चीन अपनी विस्तारवादी व आक्रमक नीतियों को लगातार बढाता जा रहा है। इसके तहत चीन अपने पडोसी देशों उकसाने की कोशिश में लगा रहता है। ताइवान न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक शनिवार को शाम 4 बजे तक 71 चीनी सैन्य विमानों और 9 नौसैनिक जहाजों को ट्रैक किया गया है। चीन ने यह कदम वेन और अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष केविन मैक्कार्थी के बीच हुई मुलाकात से नाराज होकर उठाया है। ताइवान की राष्ट्रपति साई इंग-वेन की हालिया अमेरिका यात्रा से बिदके चीन ने शनिवार को ताइवान जलडम मध्य की तरफयुद्धपोत और दर्जनों लडाकू विमान भेजे। चीन दावा करता है कि ताइवान उसका हिस्सा है। ताइवान राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय (डछक) ने कहा कि इसमें 45 विमान शामिल हैं जो शायद ताइवान स्ट्रेट की मध्य रेखा को पार कर गए या फिर दक्षिण-पश्चिम से ताइवान के वायु रक्षा पहचान क्षेत्र में प्रवेश कर गए हैं। राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय की ओर से शनिवार को निगरानी की गई। निगरानी में पाया गया कि चीनी विमानों में जे-10, जे-11, और जे-16 लडाकू जेट, शीआन वाई-20 परिवहन विमान, एच-6के रणनीतिक बमवर्षक और केजे-500 वॉर्निंग विमान शामिल थे। इससे पहले शुक्रवार को चीन की तरफ से घोषणा की गई थी कि ताइवान की सीमा के आसपास तीन दिन का सैन्य अभ्यास चलेगा है। ये युद्ध अभ्यास 8 अप्रैल से 10 अप्रैल के बीच चलेगा। जानकारी के मुताबिक, इस सैन्य अभ्यास के जरिए चीन ताइवान को अपनी सैन्य ताकत दिखाकर फिर से युद्ध की चेतावनी देने की कोशिश में है। इस सैन्य अभ्यास में चीन के लडाकू विमान ताइवान के पानी के क्षेत्रों के आसपास उत्तर, दक्षिण और पूर्व में अभ्यास करेंगे।

जन्म दर में गिरावट और बुजुर्गों की आबादी में वृद्धि

यूएस प्रतिनिधि सभा समिति की चेतावनी-ताइवान को चीन से गंभीर खतरा

एजेंसी, बीजिंग चीन में वन चाइल्ड पॉलिसी के कारण जनसंख्या में भारी गिरावट देखी जा रही है। सेंटर ऑफ पॉलिसी स्टडीज के रिसर्च फेलो शिउजियन पेंग के मुताबिक चीन में जनसांख्यिकीय संकट देश की जनसंख्या नियोजन पहल वन चाइल्ड पॉलिसी के रूप में गहराता जा रहा है। इसके तहत सरकार परिवारों को एक बच्चा पैदा करने के लिए मजबूर करती थी जिससे जनसंख्या में गिरावट आई है। इसके अलावा, वर्तमान पीढी बच्चों की परवरिश नहीं करने जैसे कारणों के चलते परिवारों को पालने में कठिनाइयों, रोजगार में अनिश्चितताओं के कारण एकल परिवार को बढ़ावा दे रहे हैं। यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय वित्त का एक प्रमुख केंद्र हांगकांग भी तेजी से अपनी आबादी खो रहा है। पोर्टल प्लस के अनुसार, ऐसा लगता है कि ये शहर राष्ट्रीय प्रवृत्ति का अनुसरण कर रहे हैं, जिसमें जन्म दर में गिरावट और बुजुर्गों की आबादी में वृद्धि देखी जा रही है। शी जिनपिंग की सख्त शून्य कोविड नीति महिलाओं द्वारा बच्चे पैदा करने में देरी करने या छोड देने का एक और बडा कारण है। घटती जन्म दर के बावजूद चीन में वरिष्ठ व्यक्तियों की संख्या बढ रही है। 2035 तक, चीन में 400 मिलियन या पूरे देश की आबादी का 30 प्रतिशत की उम्र बढघ्ने का अनुमान है। एक मीडिया पेशेवर, क्लेयर जियांग के अनुसार आने वाले जनसांख्यिकीय संकट को टालने के लिए वन-चाइल्ड पॉलिसी को आसान बनाने के बावजूद 2017 के बाद से चीन की जन्मदर में गिरावट आई है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की चीन संबंधी एक प्रवर समिति के अध्यक्ष माइक गॉलघर ने शनिवार को कहा कि अमेरिका को ताइवान के समक्ष उत्पन्न खतरे को गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि चीन ने अमेरिकी सांसदों से ताइवान की राष्ट्रपति साई इंग-वेन की मुलाकात के बाद उनके देश (ताइवान) के आसपास सैन्य अभ्यास शुरू कर दिया है। पिछले सप्ताह कैलिफोर्निया में इंग-वेन के साथ हुई बैठक में हिस्सा लेने वाले वरिष्ठ रिपब्लिकन नेता गॉलघर ने कहा कि उनकी योजना है कि वह प्रतिनिधि सभा की इस समिति के माध्यम से कांग्रेस (अमेरिकी संसद) को ताइवान सरकार की रक्षा क्षमता को मजबूत करने के वास्ते उसे शीघ्र सैन्य सहायता पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्होंने कहा, ''मैं समझता हूं कि जो स्पष्ट नजर आ रहा है, उसके संदर्भ में यह बिल्कुल जायज है। चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग की ताइवान को अपने देश में मिलाने की स्पष्ट मंशा है।श्श् गॉलघर ने कहा, ''हमें अपनी प्रतिरोध क्षमता को मजबूत करने के लिए आकाश-पाताल एक कर देने की जरूरत है, ताकि चिनफिंग की समझ में आ जाए कि वह ऐसा कर ही नहीं सकते।श्श् चीन ने शनिवार को ताइवान के आसपास अपने जंगी जहाजों और दर्जनों लडाकू जेट विमानों से चार दिवसीय सैन्य अभ्यास शुरू किया। माना जा रहा है कि चीन ने अमेरिकी सांसदों और ताइवान की राष्ट्रपति के बीच मुलाकात से नाराज होकर यह कदम उठाया है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष केविन मैक्कार्थी ने बुधवार को ताइवान की राष्ट्रपति साई इंग-वेन की मेजबानी की थी। इस बैठक में प्रतिनिधि सभा के दर्जनभर से अधिक सदस्यों ने हिस्सा लिया था।

रेलवे को चालू वित्त वर्ष में 55,000 पहियों की आपूर्ति करेगी आरआईएनएल

एजेंसी, नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की इस्पात कंपनी राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. (आरआईएनएल) भारतीय रेलवे की मांग को पूरा करने के लिए चालू वित्त वर्ष (2023-24) में 55,000 पहियों (व्हील्स) का उत्पादन करने का लक्ष्य लेकर चल रही है। कंपनी के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अतुल भट्ट ने यह जानकारी दी। विशाखापत्तनम की कंपनी आरआईएनएल ने उत्तर प्रदेश के लालगंज में एक पहिया संयंत्र लगाया है। इसकी सालाना उत्पादन क्षमता एक लाख फोर्ज्ड पहियों की है। इस संयंत्र पर 2,350 करोड़ रुपये का निवेश किया गया है। आरआईएनएल ने बीते वित्त वर्ष में रेलवे को 2,465 लोको पहियों और 2,639 एलएचबी पहियों की आपूर्ति की है। भट्ट ने कहा, ''इस संयंत्र के लिए शुरुआती स्वीकृति प्रमाणपत्र (पीएसी) जारी किया जा चुका है। बहुत जल्द इस संयंत्र का उत्पादन बढ़ाया जाएगा जिससे चालू वित्त वर्ष के लिए रेलवे की 55,000 पहियों की मांग को पूरा किया जा सके।'' इस्पात विनिर्माता कंपनी ने दिसंबर, 2021 में पहियों की आपूर्ति शुरू की थी। उस समय उसने अपनी उत्तर प्रदेश की रायबरेली इकाई से रेलवे को 51 लोको पहियों की खेप भेजी थी। भट्ट ने दावा किया कि संयंत्र के लक्षित 50 प्रतिशत उपयोग से आयात पर निर्भरता काफी कम हो जाएगी और रेलवे को आयातित की तुलना में बेहतर गुणवत्ता वाले 'मेड इन इंडिया' पहिये मिल सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह दुनिया के आधुनिक संयंत्रों में से है। ''इस संयंत्र में उत्पादित फोर्ज्ड पहिये दुरुत गति की 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ने वाली ट्रेनों की जरूरत को पूरा कर सकेंगे।'' उन्होंने कहा कि घरेलू के अलावा अंतरराष्ट्रीय बाजार की मांग को पूरा करने के लिए नई सुविधाओं को जोड़कर सालाना क्षमता को दो लाख पहियों तक किया जा सकता है। इस्पात मंत्रालय के तहत आने वाली आरआईएनएल विशेष इस्पात का उत्पादन करती है।

उलटा चोर कोतवाल को डांटे, कोरोना वायरस को लेकर चीन ने डब्ल्यूएचओ पर साधा निशाना

एजेंसी, बीजिंग। चीन ने कोरोना वायरस की उत्पति और इसके फैलाव को लेकर कभी अपनी गलती नहीं मानी है। अब उलटा चोर कोतवाल को डांटे कहावत की तरह ही महामारी को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) पर निशाना साधा है। चीनी स्वास्थ्य अधिकारियों ने कोविड-19 वायरस के स्रोत की अपनी खोज का बचाव किया औरडब्ल्यूएचओ के प्रमुख के इस बयान पर शनिवार को संगठन की आलोचना की कि बीजिंग को आनुवांशिक जानकारी पहले ही साझा करनी चाहिए थी। 'चाइनीज सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के निदेशक शेन होंगबिंग ने कहा कि डब्ल्यूएचओ की टिप्पणियां ष्घृणास्पद और अपमानजनक थीं। वैश्विक स्वास्थ्य निकाय के महानिदेशक, डॉ. टेड्रोस अधनोम घेब्रेयसस ने 17 मार्च को कहा था कि मध्य चीन के वुहान में कोरोना वायरस की आनुवंशिक जानकारी का जो खुलासा अब किया गया है, उसे 'तीन साल पहले किया जाना चाहिए था।

सस्ती हुई सीएनजी और पीएनजी

एजेंसी, बेंगलुरु। देश की सबसे बडी गैस कंपनी गेल (इंडिया) लिमिटेड की शहर गैस वितरण इकाई गेल गैस लिमिटेड ने गैस की मूल्य लागत में कमी के बाद सीएनजी और पाइप वाली रसोई गैस (पीएनजी) की कीमतों में सात रुपये तक की कटौती की है। गेल गैस ने बेंगलुरु और दक्षिण कन्नड में पीएनजी गैस की कीमत सात रुपए प्रति मानक घनमीटर घटाई है। वहीं कंपनी ने अपने परिचालन वाले अन्य शहरों में पीएनजी का दाम छह रुपए प्रति इकाई घटाया है। कंपनी ने बयान में कहा कि उसने कर्नाटक में वाहन ईंधन के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली सीएनजी के दाम सात रुपये प्रति किलोग्राम घटाए हैं। अन्य क्षेत्रों में सीएनजी का दाम छह रुपए प्रति किलोग्राम कम किया गया है। बयान में कहा गया है, ''गेल गैस लिमिटेड ने अपने ग्राहकों को नए घरेलू गैस मूल्य निर्धारण का लाभ देने के लिए नौ अप्रैल से कीमतों में उल्लेखनीय रूप से कटौती की घोषणा की है। देवास, मेरठ, सोनीपत, ताज ट्रेपेजियम क्षेत्र, रायसेन, मिर्जापुर, धनबाद, आदित्यपुर और राउरकेला में पीएनजी की नई दर 52.50 रुपए प्रति इकाई (एससीएम) होगी। बेंगलुरु और दक्षिण कन्नड के लिए यह 51.50 रुपये प्रति इकाई है। इसी तरह मेरठ और सोनीपत के लिए सीएनजी की नई कीमत 85 रुपए प्रति किलोग्राम है। देवास, ताज ट्रेपेजियम क्षेत्र और देहरादून के लिए यह 92 रुपए प्रति किलोय बेंगलुरु और दक्षिण कन्नड के लिए 82.50 रुपए प्रति किलोय मिर्जापुर के लिए 87 रुपये प्रति किलोग्राम, रायसेन, धनबाद, आदित्यपुर, पुरी और राउरकेला के लिए 91 रुपए प्रति किलोग्राम होगी। कंपनी ने सरकार द्वारा प्राकृतिक गैस के मूल्य निर्धारण के फार्मूले को संशोधन के बाद यह कदम उठाया है। संशोधित फॉर्मूले और मूल्य की सीमा की वजह से प्राकृतिक गैस की कीमत 8.57 डॉलर से घटाकर 6.5 डॉलर प्रति मिलियन ब्रिटिश थर्मल यूनिट कर दी गई है। प्राकृतिक गैस को ही वाहन के लिए सीदनजी ईंधन और रसोई में खाना पकाने वाली पीएनजी में बदला जाता है।

गोदरेज प्रॉपर्टीज की बिक्री बुकिंग बीते वित्त वर्ष में 12,232 करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्चस्तर पर

एजेंसी, नयी दिल्ली। गोदरेज प्रॉपर्टीज की बिक्री बुकिंग बीते वित्त वर्ष 2022-23 में 56 प्रतिशत बढ़कर 12,232 करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गई। आवासीय संपत्तियों की मांग बढ़ने से कंपनी की बिक्री में उछाल आया है। शेयर बाजारों को भेजी सूचना में गोदरेज प्रॉपर्टीज ने कहा कि कंपनी ने बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही और पूरे वित्त वर्ष में अपने सबसे अधिक बिक्री बुकिंग दर्ज की है। चौथी तिमाही में कंपनी की बिक्री बुकिंग 4,051 करोड़ रुपये रही। इससे पिछले वित्त वर्ष 2021-22 में कंपनी की बिक्री बुकिंग 7,861 करोड़ रुपये रही थी। इस बारे में संपर्क करने पर गोदरेज प्रॉपर्टीज के कार्यकारी चेयरमैन पिरोजशा गोदरेज ने ककहा, ''बीते वित्त वर्ष में कंपनी के अच्छे प्रदर्शन की वजह यह है कि हमारे पास देशभर में परियोजनाओं का मजबूत पोर्टफोलियो है।'' उन्होंने कहा, ''पहली बार ऐसा हुआ है जबकि हमने अपने चारों प्रमुख बाजारों...मुंबई, एनसीआर, बेंगलुरु और पुणे में दो हजार करोड़ रुपये से अधिक की बिक्री दर्ज की है।'' गोदरेज ने कहा कि पिछले साल कंपनी की कुल बिक्री में आवास खंड की हिस्सेदारी 99 प्रतिशत रही।

तोशाखाना मामले में इमरान खान की याचिका पर लाहौर एचसी में सुनवाई

एजेंसी, इस्लामाबाद। पाकिस्तान की एक अदालत ने देश के अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले की बहुप्रतीक्षित सुनवाई के लिए तारीख तय की। 'डॉन समाचारपत्र के अनुसार, न्यायाधीश शाहिद बिलाल हसन की अध्यक्षता वाली लाहौर उच्च न्यायालय की पांच सदस्यीय पीठ याचिका पर सुनवाई करेगी। इसमें कहा गया कि अदालत सुनवाई फिर से शुरू करेगी और इस मामले में दोनों पक्षों को अपनी दलीलें पेश करने की अनुमति देगी। पाकिस्तान में तोशाखाना एक सरकारी विभाग है, जहां अन्य सरकारों के प्रमुखों, विदेशी हस्तियों द्वारा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सांसदों, नौकरशाहों और अधिकारियों को दिए गए उपहारों को रखा जाता है। इमरान खान पर तोशाखाने में रखे गए तोहफों (जिसमें उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री होने के नाते मिली एक महंगी घडी भी शामिल है) को कम दाम पर खरीदने और फिर उन्हें बेचकर लाभ कमाने का आरोप है।

श्रीलंका के राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने दिलाया भरोसा, ईस्टर धमाकों के पीडतिों को मिलेगा इंसाफ

एजेंसी, कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने रविवार को भरोसा दिलाया कि 2019 में ईस्टर के मौके पर देश में हुए धमाकों के सभी पीडितों को इंसाफ मिलेगा। उन्होंने कहा कि ईस्टर पर हुए धमाकों के संबंध में कानूनी कार्यवाही स्वतंत्र रूप से, निष्पक्ष रूप से और बिना किसी दबाव के जारी है। राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने इस तरह के जघन्य कृत्यों की पुनरावृत्ति रोकने और देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता भी दोहराई। स्थानीय इस्लामी चरमपंथी समूह नेशनल तौहिद जमात (एनटीजे) से जुडे नौ आत्मघाती हमलावरों ने 21 अप्रैल 2019 को तीन चर्च और तीन लग्जरी होटल में सिलसिलेवार विस्फोट किए थे, जिनमें 11 भारतीयों समेत 270 लोगों की मौत हो गई थी और 500 से ज्यादा लोग जख्मी हुए थे। एनटीजे के आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट से संबंध हैं। विक्रमसिंघे ने ईस्टर पर अपने संदेश में कहा, इस दुखद घटना से संबंधित कानूनी कार्यवाही बिना किसी दबाव के स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से की जा रही है। सभी पीडितों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के वास्ते इस दिशा में जमीनी स्तर पर जरूरी काम किए गए हैं। राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि सरकार सभी श्रीलंकाई नागरिकों की आकांक्षाओं को साकार करने के लिए समर्पित है, फिर चाहे वे किसी भी नस्ल, धर्म, पार्टी या रंग के हों।

स्पेशलिटी रेस्तरां का पांच साल में 1,000 करोड़ रुपये के राजस्व का लक्ष्य

एजेंसी, कोलकाता। स्पेशलिटी रेस्तरां लिमिटेड का प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और ब्रांड को नया रूप देकर अगले पांच साल में 1,000 करोड़ रुपये का राजस्व हासिल करने का लक्ष्य है। कंपनी का इरादा एशियाई खाद्य उद्योग में एक अग्रणी स्थान हासिल करने का है। कंपनी के एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। बहु-ब्रांड रेस्तरां श्रृंखला का एकल शुद्ध लाभ बीते वित्त वर्ष 2022-23 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में 27.67 करोड़ रुपये रहा। इस दौरान कंपनी का कारोबार 195 करोड़ रुपये रहा। स्पेशलिटी रेस्तरां के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अंजन चटर्जी ने पीटीआई-से कहा, ''हमारा अगले पांच साल में 1,000 करोड़ रुपये का राजस्व हासिल करने का लक्ष्य है। अभी हमारी योजना अगले चार साल में अपने मौजूदा राजस्व को दोगुना करने और छह साल में इसे तीन गुना करने की है। फिलहाल कंपनी का कारोबार 400 करोड़ रुपये है।''

चीनी की मिठास पर महंगाई की मार

कीमत 6 साल की रिकॉर्ड ऊंचाई पर

एजेंसी, चीनी की कीमतों में रिकॉर्ड तेजी देखने को मिल रही है। उत्पादन घटने से चीनी की कीमतों में बढ़ोतरी देखने को मिली है। उद्योग के अधिकारियों ने न्यूज एजेंसी रायटर्स को बताया कि भारत में चीनी की कीमतें दो हफ्तों में 6 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखी गई हैं और इसके आगे बढ़ने की संभावना है। चीनी के उत्पादन में गिरावट आ रही है और थोक उपभोक्ताओं की मांग बढ़ने की संभावना है। डीलरों ने कहा कि उच्च स्थानीय कीमतों से बलरामपुर चीनी, श्री रेणुका शुगर्स, डालमिया भारत शुगर और द्वारिकेश शुगर जैसी चीनी निर्माताओं के मार्जिन में सुधार होगा, जिससे उन्हें किसानों को समय पर गन्ने का भुगतान करने में मदद मिलेगी। उत्पादन में कमी और मांग बढ़ने से वैश्विक बाजार में चीनी की कीमत 6 साल की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई है। जानकारों का कहना है कि यूक्रेन रूस संकट के बाद कच्चे तेल की आपूर्ति प्रभावित हुई है। इसकी वजह से भारत समेत कई देश इथेनॉल बनाने में गन्ने का इस्तेमाल बढ़ा सकते हैं। इथेनाल का इस्तेमाल पेट्रोल में होता हैय इसके साथ ही न्यूयॉर्क में कच्चे शक्कर के भाव बढ़कर 23.46 सेंट प्रति पाउंड हो गए हैं। ये अक्टूबर 2016 के बाद का उच्चतम स्तर है।

महाराष्ट्र में उत्पादन में गिरावट के कारण बढ़ रही कीमतें

बॉम्बे शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक जैन ने कहा कि चीनी की कीमतें मुख्य रूप से शीर्ष चीनी उत्पादक राज्य महाराष्ट्र में उत्पादन में गिरावट के कारण बढ़ रही हैं। डीलरों का अनुमान है कि 30 सितंबर को समाप्त होने वाले मार्केटिंग ईयर 2022ध्23 में महाराष्ट्र में लगभग 10.5 मिलियन टन का उत्पादन होने की संभावना है, जबकि पहले 13.7 मिलियन टन का अनुमान लगाया गया था। आने वाले महीनों में कीमतें और बढ़ेंगी क्योंकि गर्मी के मौसम की वजह से थोक खरीदारों की मांग बढ़ने की उम्मीद है।

गर्मियों के मौसम में बढ़ जाती है खपत

अप्रैल से जून तक चलने वाले गर्मी के महीनों के दौरान भारत में कोल्ड ड्रिंक्स और आइसक्रीम की खपत बढ़ने से चीनी की मांग बढ़ जाती है।

शादियों के सीजन से गर्मी में भी मांग को बल मिलता है। एक ग्लोबल ट्रेडिंग फर्म के साथ मुंबई के एक डीलर ने कहा कि पिछले साल कोविड-19 महामारी से बाधित होने के बाद मांग में फिर से उछाल आया है और इस मार्केटिंग वर्ष में रिकॉर्ड 28 मिलियन टन तक बढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि सरकार अतिरिक्त निर्यात की अनुमति देने की संभावना नहीं है क्योंकि सीजन के लिए क्लोजिंग स्टॉक लगभग 5.5 मिलियन टन तक गिर सकता है, जो छह साल में सबसे कम है। भारत ने चीनी मिलों को चालू सीजन में केवल 6.1 मिलियन टन स्वीटनर का निर्यात करने की अनुमति दी है, जो पिछले सीजन के रिकॉर्ड 11 मिलियन टन से कम है।

तुनिषा शर्मा सुसाइड केस में शीजान ने की एफआईआर रद्द कराने की अपील

टीवी सीरियल अली बाबा, दास्तान एक काबुल' के लीड एक्टर रह चुके शीजान खान को कुछ समय पहली ही जेल से रिहा मिली है। शीजान खान दिवंगत एक्ट्रेस तुनिषा शर्मा सुसाइड केस के मामले के मुख्य आरोपी थे जिनके खिलाफ तनीषा की माँ ने एफआईआर दर्ज कराई थी जभी से शीजान खान को गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन अब शीजान खान जेल से रिहा होने के लिए अदालत के चक्कर काटते दिखाई दे रहे है। अदालत के चक्कर काटते दिखाई दे रहे शीजान खान ने के बार फिर कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है खटखटाया है। शीजान खान ने कोर्ट में अपने खिलाफ हुई एफआईआर को रद्द करने की मांग की है, वही सामने आई एक रिपोर्ट के मुताबिक शीजान के वकील शैलेंद्र मिश्रा ने कहा- मामले की सुनवाई मंगलवार को होगी। वही अपनी बात को आगे कहते हुए शीजान के वकील शैलेंद्र मिश्रा ने कहा इस बार में अपनी तैयारी को लेकर कॉन्फिडेंट हूं, अगर इस मामले पर सुनवाई या बहस हुई तो मेरे क्लाइंट शीजान खान की ही जीत होगी और शीजान के खिलाफ हुई एफआईआर को रद्द कर दिया जाएगा अपनी बात को आगे खत्म करते हुए उनके वकील ने कहा मैं फिर से कह रहा हूँ कि सत्य की जीत होगी। बता दे, शीजान और तुनिषा टीवी स्टार होने के साथ साथ रिलेशनशिप में भी थे वही दोनों ने अली बाबा' में एक साथ काम किया था जिसके बाद से दोनों एक दूसरे को डेट करते नजर आए। सुसाइड के बाद तनीषा की माँ ने एक्टर शीजान खान पर बेटी को सुसाइड के लिए उकसाने का आरोप लगाया था। जवाही रिलेशनशिप और ब्रेकअप से परेशान तुनिशा ने सुसाइड की थी। खैर, अब देखना होगा कि शीजान पर लगे आरोप बेबुनियाद साबित होते हैं या नहीं।

›››› बॉलीवुड ‹‹‹‹

आलिया भट्ट ने एन्जॉय की लेट नाईट मूवी डेट, पति रणबीर नहीं बल्कि बहन शाहीन भट्ट और माँ सोनी राजदान साथ आई नजर

बॉलीवुड में गंगूबाई के नाम से फेमस एक्ट्रेस आलिया भट्ट किसी पहचान की मोहताज नहीं। उन्होंने फिल्मी दुनिया में आज जो मुकाम हासिल किया हैं वह उनकी कड़ी मेहनत और बल का ही नतीजा हैं जो आज वह हर एक बड़े से बड़े एक्टर और डायरेक्टर के संग काम कर चुकी हैं। लेकिन आलिया जितनी अपनी प्रोफेशनल लाइफ के लिए फेमस हैं उतनी ही अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी एक्ट्रेस सुर्खियों में छायी रहती हैं। ऐसे ही बीती रात भी आलिया अपनी फैमिली की दो इम्पोर्टेन्ट लेडी संग पैपराजी के कैमरे में कैद हो गई। बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट अपनी मां सोनी राजदान और बहन शाहीन भट्ट के साथ लेट मूवी नाइट एंजॉय करते हुए स्पॉट की गई इस दौरान एक्ट्रेस को मुंबई के थिएटर के बहार स्पॉट किया गया। और अब इंटरनेट के गलियारों पर भी इस न्यूली मदर की ये एन्जॉय मोमेंट की तस्वीरें काफी वायरल होती नजर आ रही हैं। तो देखिये तस्वीरें। आलिया भट्ट हाल ही में अपनी मां सोनी राजदान और बहन शाहीन भट्ट के साथ मुंबई के जुहू में स्पॉट किया गया जहां तीनो ही लेडीज काफी अच्छे मूड में नजर आई। आलिया भट्ट अपनी मां और बहन के साथ जुहू स्थित पीवीआर में मूवी डेट एंजॉय करते हुए देखी गई थी। आपको बता दे कि इस दौरान आलिया भट्ट काफी खुश दिखीं उनके लुक पर एक अलग सा ही सुकून देखने को मिला। सोनी राजदान और उनकी दोनों लाडली कैजुअल लुक में दिखाई दी। लेकिन तीनो का ही लुक काफी कम्फर्टेबल और स्टाइलिश था। इस मूवी डेट के लिए आलिया भट्ट ने डेनिम शर्ट के साथ जींस और स्लाइडर्स पहने हुए थे। उन्होंने अपने लुक को खुले बाल और नो मेकअप और साथ ही ब्रांडेड बैग के साथ पूरा किया हुआ था। बात करे उनकी बहन शाहीन भट्ट की तो उन्होंने जींस और स्वेटशर्ट में नजर आईं। जबकि उनकी मां को भी व्हाइट शर्ट और जींस में देखा गया। तीनो ही लेडीज काफी क्लासी लग रही थी। आलिया भट्ट कुछ महीने पहले ही मां बनी हैं। वह और रणबीर कपूर एक बेटी के माता–पिता बने, जिसका नाम राहा है। कुछ समय तक घर में आराम करने के बाद अब वह काम और फैमिली के साथ आउटिंग पर स्पॉट होती रहती हैं। आलिया भट्ट जल्द ही 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में रणवीर सिंह के साथ दिखाई देंगी।

6 सीजन करने के बाद मिनी माथुर ने फोड़ा इंडियन आइडल का भांडा, क्या बिल्कुल फेक है ये रियलिटी शो

टीवी पर आपको कई बड़े रियलिटी शो देखने को मिल जाएंगे। लेकिन ये रियलिटी शो कितने रियल हैं और कितने फेक ये पता लगा पाना नामुमकिन है। कई शोज इतना ड्रामा क्रिएट करते हैं कि लोग इमोशनल होकर उस शो से जुड़ ही जाते हैं। आजकल तो रियलिटी शो के चक्कर में नकली गरीबी की कहानी से लेकर फेक लव स्टोरीज तक अपने दर्शकों को चिपकाते नजर आ जाते हैं। वहीं, एक फेमस सिंगिंग रियलिटी शो काफी समय से कंट्रोवर्सी में बना हुआ है। अब तो आप समझ ही गए होंगे हम किस शो की बात कर रहे हैं। जी हां, यहां बात हो रही है इंडियन आइडल की जिसकी काली सच्चाई अब दुनिया के सामने आ गई है। अब इंडियन आइडल के 6 सीजन होस्ट कर चुकी मिनी माथुर ने इस शो को लेकर कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। उन्होंने जो बताया है उसे सुनकर ऑडियंस का रियलिटी शो से भरोसा उठ सकता है। दरअसल, हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में मिनी माथुर ने इस शो का पर्दाफाश किया और इस शो अलविदा कहने की वजह का भी खुलासा किया। शो छोड़ने के इतने सालों बाद मिनी माथुर ने बताया कि जब वो इंडियन आइडल होस्ट करती थीं, तब वो सभी कंटेस्टेंट्स के करीब थीं। वो उन्हें घर पर डिनर के लिए भी बुलाती थीं। लेकिन जब शो का ध्यान कंटेस्टेंट्स से हटा तो उन्हें बहुत दुख हुआ। मिनी माथुर ने कहा, मैंने शो तब छोड़ा, जब मुझे महसूस हुआ कि ये रियलिटी शो रियल नहीं रहा। मैंने 6 सीजंस किए, उसके बाद ये शो सिर्फ पैसे कमाने के लिए था। पैसा बनाना शुरू कर दिया गया था और मैं ऐसे बनावटी रिएलिटी शो की तारीफ नहीं कर पाई। शो स्क्रिप्टेड होने लगा।

पहली बार फिल्मी पर्दे पर संग नजर आएंगे शाहिद कपूर और कृति सेनन, अनटायटल्ड फिल्म का फर्स्ट लुक पोस्टर हुआ रिवील

हिंदी सिनेमा के सुपरस्टार और साथ ही कबीर सिंह फैम एक्टर शाहिद कपूर और एक्ट्रेस कृति सेनन को पहली बार फिल्मी पर्दे पर स्क्रीन शेयर करते हुए देखा जायेगा। इस जोड़ी को अब जल्द ही एक लव स्टोरी फिल्म में एक–दूसरे संग लव सीन करते हुए देखा जाने वाला हैं। और साथ ही ये वो पहला मौका होगा जब शाहिद और कृति किसी फिल्म में एक साथ स्क्रीन शेयर करते नजर आएंगे। शनिवार को शाहिद कपूर और कृति सेनन की इस अनटाइल रोमांटिक मूवी का फर्स्ट लुक पोस्टर भी सामने आया है। जिसके बाद से ही इनके फैंस इन्हे साथ में देखने के लिए और भी उतावले हो उठे हैं। बॉलीवुड एक्टर शाहिद कपूर और कृति सेनन की इस अपकमिंग लव स्टोरी फिल्म के फर्स्ट लुक पोस्टर ने फैंस की एक्साइटमेंट को और भी दोगुना कर दिया है। शनिवार को मशहूर फिल्म क्रिटिक्स तरण आदर्श ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर एक लेटेस्ट पोस्ट को शेयर किया है। जिसमे तरण की ओर से शेयर किया गया है ये पोस्ट शाहिद कपूर और कृति सेनन की अनटाइटल अपकमिंग फिल्म के फर्स्ट लुक पोस्टर हैं जिसमे इनकी ये सिजलिंग केमिस्ट्री साफ देखी जा सकती हैं। इस पोस्टर में जैसा कि आप देख भी सकते हैं कि शाहिद और कृति एक बाइक पर बैठे रोमांस फरमाते हुए नजर आ रहे हैं। तरण के मुताबिक इस फिल्म में शाहिद कपूर और कृति सेनन के अलावा हिंदी सिनेमा के दिग्गज कलाकार धर्मेंद्र और डिंपल कपाड़िया भी लीड रोल में मौजूद हैं। फिल्म के निर्माता मैडॉक फिल्म के कर्ता–धर्ता दिनेश विजान और डायरेक्टर अमित जोशी और आराध्या हैं। पहली बार फैंस को शाहिद कपूर और कृति सेनन की जोड़ी का धमाल बड़े पर्दे पर देखने को मिलेगा। और इस बात में भी कोई दो राह नहीं के दोनों ही अपने कामो में कितने ज्यादा परफेक्ट और निपुण हैं। हालाँकि इन दोनों की इस फिल्म का टाइटल अभी तक सामने नहीं आया है। लेकिन फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी है। साथ ही तरण आदर्श ने बताया है कि ये शाहिद कपूर और कृति सेनन की ये अनटाइटल फिल्म इसी साल अक्टूबर के महीने में रिलीज होगी।

›››› बॉलीवुड ‹‹‹‹

लंदन के इस बिजनेसमैन को डेट कर रहीं न्यासा देवगन, रोमांटिक फोटोज हुई वायरल

स्टार कपल अजय देवगन और काजोल की बेटी न्यासा देवगन ने भले ही बॉलीवुड डेब्यू ना किया हो लेकिन न्यासा उसके बावजूद हर टाइम सुर्खियों में बनी रहती है। 19 साल की न्यासा अपने फैशन स्टाइल से सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लेती हैं। पब्लिक अपीयरेंस से लेकर पार्टीज और अपने वेकेशन आउटफिट्स तक न्यासा के आउटफिट्स चर्चा में बने रहते हैं।न्यासा देवगन को अक्सर उनके दोस्तों के साथ पार्टी करने देखा जाता है। खासतौर पर न्यासा अपने करीबी दोस्त ओरहान अवात्रामणि उर्फ ओरी के साथ स्पॉट होती हैं। दोनों को हमेशा साथ देखकर ये अफवाहें भी सामने आई थी कि क्या दोनों एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं। मगर बताया जा रहा है कि न्यासा और औरी सिर्फ अच्छे दोस्त है जबकि न्यासा किसी और शख्स को डेट कर रही हैं। अजय की लाडली न्यासा की लव–लाइफ को लेकर एक दिलचस्प खबर सामने आई है। लेटेस्ट मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, न्याया इस टाइम लंदन बेस्ड बिजनेसमैन वेदांत महाजन को डेट कर रही हैं। वेदांत को ज्यादातर ही न्यासा और औरी के साथ पार्टी करते देखा जाता है। बताया जा रहा है कि न्यासा और वेदांत दोनों एक कथित रिश्ते में हैं। न्यासा इन टाइम अपने दोस्तों और वेदांत के साथ जैसलमेर के सूर्यगढ़ में वेकेशन मना रही हैं। उनकी कुछ तस्वीरें सामने आई हैं, जिसे ओरी ने फोटो शेयरिंग साइट पर शेयर किया है। इन फोटोज में हमें कथित बॉयफ्रेंड वेदांत के साथ न्यासा की शानदार केमेस्ट्री की एक झलक देखने को मिल रही है। वेदांत के इंस्टाग्राम अकाउंट पर न्यासा और उनकी काफी सारी फोटोज है जिनमें दोनों की शानदार केमिस्ट्री देखने को मिल रही है। वैसे ऐसा पहली बार नहीं है इससे पहले भी वेदांत और न्यासा को कई मौकों पर एक–साथ देखा गया है। साल 2022 में न्यासा अपने दोस्त औरी और रूमर्ड बॉयफ्रेंड वेदांत महाजन के साथ स्पेन की यात्रा भी की थी। बता दें कि वेदांत महाजन अपने दो दोस्तों के साथ एमवीएम एंटरटेनमेंट के सह–मालिक हैं, जो एक कार्यक्रम आयोजित करने वाली कंपनी है।

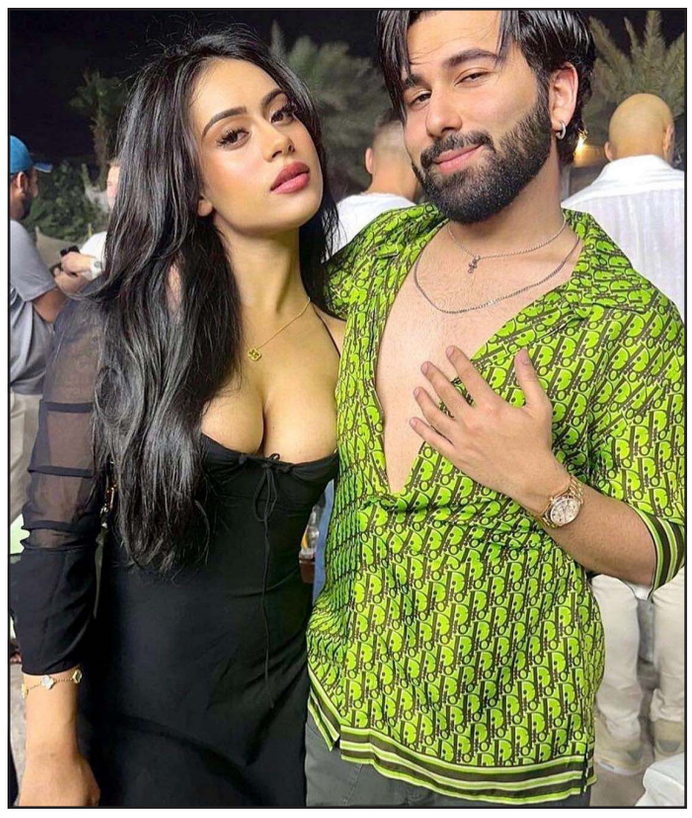

स्टार एक्सप्रेस स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी–18, सेक्टर–सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com